राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी

ग्रामीण विकास मंत्रालय

भारत सरकार

राजभाषा स्मारिका

(अष्टम संस्करण–2020)

संदेश

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी (एन.आर.आई.डी.ए.) कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका **"हिंदी स्मारिका"** का अष्टम (8वां) संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है । यह पत्रिका न केवल कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि एवं सम्मान की द्योतक है अपितु राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की दिशा में कार्यालय के बढ़ते कदमों की भी परिचायक है ।

हिंदी ने हमेशा से हमारे देश की एकता और अखन्डता बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और इसका प्रयोग हमारे देश के प्रति सम्मान व गौरव का एक सशक्त प्रतीक है।

आशा है कि "हिंदी स्मारिका" के इस अंक द्वारा आप सभी कार्यालय के सहकर्मियों की मौलिक रचनायें पढ़कर उनके हिंदी ज्ञान तथा रचनात्मकता से प्रेरणा लेंगे ।

डॉ.आशीष कुमार गोयल

महानिदेशक

विषय सूची

क्रसं.	रचना	रचयिता / संकलनकर्ता	पृष्ठ
1.	समय प्रबंधन – एक कला...या आदत	श्री दीपक आशीष कौल निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	1
2.	सम्मान	श्री गिरीश चन्द्र सिंह सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	5
3.	जिन्दगी के कुछ लम्हें	श्री राजकुमार अरोड़ा सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	6
4.	सोच	श्री राजेश मक्कड़ सहायक निदेशक (वित्त एवं प्रशा.)	9
5.	हवाएं	श्री एच.एस.सैनी परामर्शदाता (एडीबी)	11
6.	कोरोना वाइरस – महामारी	श्री सी पी एस यादव सहायक निदेशक (पी– I.)	12
7.	बेटियां	श्री राहुल चराया सी.ए. (वित्त एवं प्रशा.)	13
8.	एक पिता का फैसला	श्री मोहित माथुर कार्यकारी सहायक (तकनीकी)	14
9.	जनरेशन गेप	सुश्री पूनम जे देसाई कार्यकारी सहायक (पी– I)	16
10.	कालापानी	सुश्री सोनम शर्मा उत्पादन प्रबंधक, आईटी विभाग	18
11.	सबसे बड़ा पुण्य	श्री रामकृष्ण पोखरियाल निजी सहायक (वि. एवं प्रशा.)	19
12.	ना समझ को समझ दो वरदान नहीं	श्री पवन स्टोर अटैंडेंट	21
13.	दान की महिमा	श्री नवीन जोशी कार्यकारी सहायक (पी– I)	22
14.	मैं कौन हूँ	श्री दीपांकर कुमारा कार्यकारी सहायक (परि. I I I)	23
15.	मेट्रो की आवाज	श्री प्रदीप चितौड़ लेखापाल (वित्त एवं प्रशा.)	24
16.	भगवान और भक्त	श्री विजय इंग्ले प्रोग्रामर	26
17.	आपका विचार आपके जीवन का आकार	श्रीमती रेखा जुयाल कार्यकारी सहायक (विश्व बैंक)	27
18.	कविता क्या है	श्री गोकुलानंद फुलारा कार्यालय सहायक (वि. एं प्रशा)	28
19.	एक राक्षस 'गयासुर' के कारण बन गया है मोक्ष स्थली	श्री भूपाल सिंह बिष्ट कार्यकारी सहायक (वि. एवं प्रशा.)	29
20.	जीना सिखिए	सुश्री रेनू शर्मा कार्यालय सहायक (वि. एवं प्रशा)	30
21.	दान भावना	श्रीमती गुलशन निजी सहायक (वि एवं प्रशा.)	31
22.	गुरू की इच्छा प्रभु की इच्छा	श्री यतिन्द्र कुमार वत्स परामर्शदाता	33
23.	समाचार पत्र	सुश्री लक्ष्मीकान्ता निजी सहायक (पी– I I)	34
24.	बेटी बेटों से कम नहीं	श्रीमती प्राची गुसांई कार्यकारी सहायक (पी– I I I)	37
25.	भारत में लोकतंत्र	मोहम्मद जावेद निजी सहायक (पी– I)	38
26.	भारत में हिन्दी की उपयोगिता	श्री रोहित कुमार निजी सहायक (तकनीकी)	40
27.	कौआ और साधू की गाथा	श्री रोहन सिंह सुरक्षागार्ड	43
28.	धन और ज्ञान	श्री भवानी मिश्र एमटीएस	45
29.	एक पल में क्या वक्त बदल जाए	शाहिद स्टेशनरी इंर्चाज	46
30.	बुद्धिमान यात्री	श्री उमेश सिंह एमटीएस	47
31.	वास्तविक दर्द	श्री लवली सूदन का. स. एवं केयर टेकर (पी– I I I)	48
32.	यातायात के नियमों का पालन	श्री अनिल कुमार प्रेषक	49
33.	सच्ची घटना	श्री संजय चौहान मैसेन्जर	50
34.	कहां है भगवान	श्री संतोष ऑफिस बॉय	52
35.	डरपोक पत्थर	श्री संजय कुमार ऑफिस बॉय	53
36.	एक चिड़िया की कहानी	मोहम्मद आसिफ ऑफिस बॉय	54
37.	एक निश्चय – एक अमल	मोहम्मद आदिल ऑफिस बॉय	55
38.	बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताए	श्री बिसन सिंह ऑफिस बॉय	56
39.	साधू और चोर	श्री धीरज कुमार ऑफिस बॉय	57
40.	पिंडारी ग्लेशियर	श्री प्रदीप सिंह ऑफिस बॉय	58

समय प्रबन्धन – एक कला....या आदत

दीपक आशीष कौल
निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

दोस्तों जैसा कि आप सब जानते है, समय ही किसी भी व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण व मूल्यवान वस्तु होती है। जहाँ एक तरफ, समय का सुचारु उपयोग करके हम अपने जीवन को बेहतर बनाकर उसमे चार चाँद लगा सकते है वहीं दूसरी तरफ इसका दुरुपयोग जीवन को बदहाली की तरफ ले जाता है। अंग्रेजी मे भी एक मशहूर कहावत है कि "टाईम इज मनी"। इसका अर्थ यह है कि समय की महत्वता जीवन में पैसे के बराबर है। मेरी राय मे समय की महत्वता पैसे या अन्य किसी चीज से कहीं ज्यादा है क्योकि अगर आप के पास समय है तो आप कुछ भी कर सकते है यदि समय नहीं है तो चाहते हुए भी कुछ करना नामुमकिन हो जाता है। समय होते हुए आप पैसा तो कमा सकते हैं, पर पैसे से समय नहीं खरीद सकते हैं। इसी परिपेक्ष मे निपुण समय प्रबन्धन का महत्व जब आप देखेगे तो जीवन में इसकी असली उपयोगिता नजर आएगी।

समय प्रबन्धन के बारे में कुछ लोगों की राय है कि यह एक कला है और सीखी जा सकती है परन्तु कुछ लोगों के विचार में यह एक आदत है जो मनुष्य अपने पूर्वजों से विरासत में पाता है, और इस वजह से इसको सीखा नहीं जा सकता है। मेरी राय में सच्चाई इन दोनों दृष्टिकोणों के बीच में कहीं स्थित है। समय प्रबन्धन एक आद्त तो है ही जिसे अन्य आदतों की तरह और भी विकसित किया जा सकता है परन्तु इसे काफी हद तक सोच समझ कर सीखा और अपनाया भी जा सकता है। समय प्रबन्धन को अपने जीवन का एक अभिन्न अंग बनाने के लिए आवशयक है कि हम इसको अपनी दिनचर्या का एक हिस्सा बना ले व नियमित रुप से अपने दैनिक क्रियाकलापों में इसका पालन करें।

अपने दैनिक जीवन में समय को प्रभावशाली रुप में प्रयोग करने हेतु कुछ सुझाव दिये जा रहे है। पाठकगण अगर इन सुझावों का प्रयोग अपने जीवन व कार्यप्रणाली में करेगें तो मुझे उम्मीद ही नही बल्कि विश्वास है कि वह अपने सभी कार्य सुचारु रुप से व एक योजनाबद् तरीके से संपूर्ण कर पायेगे।

1 कार्यों की योजना बनाना

रोज सवेरे उठते ही हमें अपने दैनिक कार्यो की एक संक्षिप्त योजना बनानी चाहिये। इससे हमें अपने कार्य क्षेत्र व निजी कार्यों को शामिल करना चाहिए जो हम उस दिवस मे पूरे करना चाहते है। यह योजना हम अपने मस्तिषक में या फिर लिखकर बना सकते है। ज्यादा प्रभाव के लिए उचित होगा यदि पाठ्क इन कार्यो की एक सूची बनाकर अपने पास रखे ताकि कोई भी काम

छूट्ने न पाये। जैसे-जैसे इस सूची मे लिखे कार्य हम करते जाए उनको सूची से काटते जा सकते है। यह तरीका समयानुसार कार्य पूरा करने का एक अचूक नुस्खा है। इसी तरह से जब भी हम खरीददारी करने बाजार जाए या ऑनलाइन खरीददारी करे उससे पहले हमें एक सूची बनानी चाहिए ताकि हम अपनी जरुरत की सभी चीजे एक बार में ही क्रय कर ले व बार बार हमें इसी कार्य पर समय नष्ट न करना पडे। पाठ्कगण इस दैनिक कार्य की सूची में जरुरतानुसार महत्वपूर्ण कार्यो को जोड भी सकते है ताकि समयानुसार इन कार्यो का निषपादन किया जा सके।

2. छोटे व आसान कार्यो को पहले करना उचित समय प्रबन्धन का एक और गुरुमंत्र है, आसान कार्यो को पहले करना। यह नियम अपने कार्यालय के व निजी जीवन के कार्यो के लिए बराबर रुप से लागू होता है। आसान व जल्दी होने वाले कार्यो को पहले पूरा करने से हमें हौसला मिलता है और अपने लक्ष्य की तरफ अग्रसर होने का विश्वास व खुशी भी मिलती है जिससे हम अपने बचे हुए काम समाप्त करने की ओर प्रतिबध्द हो जाते है। अगर हम मुश्किल कामो को पहले करने में उलझ जाते है और कही भी अटक जाते है तो हमें निराशा हो सकती है जिसकी वजह से हमारा मनोबल कमजोर पड सकता है और हमारी कार्य निष्पादन की क्षमता पर नकारात्मक असर पड सकता है।

3. वस्तुओ को यथा स्थान रखना

पाठकगण, कई बार आपने महसूस किया होगा कि किसी चीज को ढूढने में आपका काफी समय लग गया। यह हर किसी के साथ होता है। इसीलिए समय प्रबन्ध का एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण पहलू है चीजो को रखने की उचित जगह बनाना व उन्हे अपने नियत स्थान पर रख्ननना। अगर हम अपने सामान को उसकी नियत जगह पर ही रखेंगे तो वह हमेशा हमें वही पर से मिलेगा और इस प्रकार से हमारा समय अपने सामान को ढूढने में अकारण ही बर्बाद नहीं होगा और हम अपने कार्य अपनी योजना के अनुसार समयबध्द तरीके से कर पायेंगे।

4. कार्य को समय पर करना

कार्य को समय पर करना भी अच्छे समय प्रबन्धन का एक गुर है। आपने जरुर देखा होगा कि कई बार कोई काम समय से न किये जाने के कारण बिना वजह ही मुश्किल हो जाता है। मैं इसको समझाने के लिए अपने जीवन की एक सत्य घटना का वर्णन करता हूँ। एक बार की बात हैं मेरे पास यातायात पुलिस विभाग से एक नोटिस आया कि मैंने निर्धारित गति सीमा से अधिक गति पर गाडी चलाकर नियम का उल्लंघन किया हैं जिसके लिए मुझे 60 दिनो के भीतर रु. 2000/- का जुर्माना भरना पडेगा। मैंने सोचा कि अभी तो जुर्माना भरने के लिए काफी समय है, और मैं वह नोटिस कही रख कर भूल गया। करीब 3-4 महीनो के बाद एक दिन अनायास ही मुझे वह नोटिस कुछ अन्य कागजो के बीच में दबा हुआ मिला। मैंने तुरंत ही जुर्माने के भुगतान के लिए यातायात पुलिस की विभागीय वेबसाईट पर लॉगिन किया। परंतु, तब तक काफी देर हो चुकी थी और मुझे पता चला कि मेरा यातायात चालान नियत तिथि तक भुगतान न होने के

कारणवश अदालत मे भेज दिया गया हैं। मैंने फिर बहुत ही जद्दोजहद और दौड़ भाग के बाद अदालत में जाकर जुर्माना भरा। देर हो जाने के कारण जुर्माना कि राशि भी दोगुनी हो गई और मुझे रु. 4000/- का भुगतान करना पड। अगर मैं समय से जुर्माना भर देता तो मेरा काफी समय भी बचता और राशि भी। इसीलिए मैं आप को मशवरा देता हूँ कि अपने कार्यो को समय से निपटाते चले ताकि आपको नुकसान न हो और आपका समय भी बचे।

5. दिनचर्या का परीक्षण

अपने दिन भर के समय को प्रभावशाली रुप से प्रयोग करने के लिए सबसे पहले हमें अपनी दिनचर्या का आत्म विवेचन करना चाहिए। इससे हमें यह ज्ञात होगा कि प्रतिदिन कौन सी क्रिया मे हम कितना समय लगाते हैं और क्या इसी क्रिया को जल्दी किया जा सकता है या नहीं। इससे हमे यह भी ज्ञात होगा कि कई काम जो हम रोज दिन भर कर रहे है उनमे से कुछ तो किसी और को प्रत्यायोजित किया जा सकता है जिससे कि हमारा कीमती और सीमित वक्त केवल उन कार्यो में व्यतीत हो जो कि सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। यकीन मानिए जब आप यह प्रक्रिया पूरी करके अपने द्वारा किये गए कार्यो का विश्लेषण करेगे तो आप काफी समय की बचत कर पायेगे।

6. कार्य प्रत्यायोजन

कार्य प्रत्यायोजन समय प्रबन्धन का एक महत्वपुर्ण स्तम्भ है। जैसा कि सभी जानते है कि हर किसी मनुष्य के पास समय एक सीमित मात्रा में होत्ता है और कई परिस्थितियो मे कार्य समय की तुलना मे ज्यादा होते है। ऐसी परिस्थिति में, समय से काम पूरे करने के लिए कार्य प्रत्यायोजन आवश्यक है। हमको अपने कार्य क्षेत्र व निजी जीवन में किये जाने वाले कार्यो का मूल्यांकन कर के इनका प्रत्यायोजन करना चाहिए ताकि हमारे पास केवल उतने ही कार्य रहे जो ज्यादा महत्वपूर्ण हैं और जो हम अपने सीमित समय में पूरे कर पाये।

कुछ लोग कार्यो के प्रत्यायोजन का समर्थन इसलिए नहीं करते है क्योकि उनको अपने साथी व दफ्तर में कनिष्ठ कर्मचारियो पर विश्वास नहीं होता कि वह कार्यो का निर्वहन सुचारु रुप से कर पायेंगे। मेरी नजर मे यह सही **दृष्टिकोण** नहीं है और एक संकुचित व्यक्तित्व का घोतक है। ऐसी मानसिकता से हमे उबरना चाहिए और दूसरो की कार्य क्षमता पर संदेह नहीं करना चाहिए। हमें हमारे मानव संसाधनो को प्रशिक्षण के द्वारा इस लायक बनाना चाहिए कि वह उनको दिए गऐ कार्यो को समयबद्ध तरीके से सुचारु रुप से पूरा कर सके।

7. एक समय में एक कार्य

प्रभावी समय प्रबन्धन के लिए आवश्यक हैं कि हम अपने कार्यो को उनके लिए निर्धारित समय सीमा के भीतर पूर्ण करे। यह तभी सम्भव होगा जब हमारा पूरा ध्यान और एकग्रता, किये जा रहे कार्य पर ही केंद्रित हो। उस समय मे वह किया जा रहा कार्य ही हमारा केंद्र बिंदु होना चाहिए। यदि हम एक ही समय में भिन्न-भिन्न कार्यो को करने की कोशिश करेंगे तो काफी हद तक सम्भव हैं कि हम किसी भी कार्य को समय के अंदर न पूरा कर पाए या फिर किये गये कार्य कि गुणवता अच्छी न हो। इसलिए पाठकगण, कोशिश करे कि हर कार्य को पूरा करने की एक समय सीमा निर्धारित करे व एक वक्त पर एक ही कार्य का सम्पादन पूरी एकाग्रता के साथ किया जाए।

8. समय का सम्मान करे

हमें हमेशा अपने और दुसरो के समय का सम्मान करना चाहिए। जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ कि समय ही एक व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण वस्तु हैं। जो समय एक बार निकल गया, वह कभी भी आपके जीवन काल में वापस नहीं आयेगा। इसी कारण हमे समय का सम्मान करना चाहिए। हमें हमेशा बैठको व अन्य पूर्व नियोजित समारोह, सभाओ इत्यादि के लिए हमेशा समय से ही पहुंचना चाहिए ताकि निर्धारित कार्यक्रम अपने समयानुसार पूरा हो जाए और उसकी समाप्ति में विलम्ब न हो। यह एक छोटी सी आदत हैं जो कि समय प्रबन्धन का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं।

पाठकगण, अंत में मैं आपसे यह कहना चाहूँगा कि समय प्रबन्धन इस तेजी से चलती दुनिया कि एक महत्वपूर्ण जरुरत हैं। हम सभी के दिल और दिमाग मे कई चीजो को करने की आशाए है। परंतु हम सबके पास समय एक सीमित मात्रा मे ही हैं। आप उपरोक्त वर्णित सुझावो को अपने जीवन मे प्रयोग कर के निपुण समय प्रबन्धन के द्वारा अपने समय का सही इस्तेमाल कर के अपने जीवन को पूर्णता जी कर अपनी आशाओ और ख्वाहिशो को काफी हद तक पूरा कर सकते हैं।

गिरीश चन्द्र सिंह
सहायक निदेशक (वि. एवं प्रशा.)

सम्मान

सम्मान एक अतिवांछनीय एवं दुलर्भ नहीं वरन कठिनाई से प्राप्य वस्तु है जिसे हम देख नहीं सकते परन्तु यह एक अनुभूति है जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है! इसकी अभिव्यक्ति व्यक्ति के हाव–भाव व भाषा के द्वारा परिलक्षित होती है। यह एक ऐसा भाव है जिससे न केवल मनुष्य अपितु संसार के सभी अन्य चराचर भी अछूते नहीं है।

यह विद्या संसार में आदर, इज्जत, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, आत्म सम्मान प्रशंसा, अभिवादन इत्यादि के रूप में प्रचुरता से उपलब्ध है। प्रत्येक उस व्यक्ति, जिसे यह उपलब्ध है, के लिए यह एक संजीवनी की भांति कार्य करता है व उम्र के प्रत्येक पड़ाव पर इस प्रेरणादायी, मनोबलकारी, संजीवनी के परिणाम भी अलग–अलग प्रकार से दृष्टगोचर होते हैं।

मैं एक मध्यवर्गीय, सेवारत कर्मचारी हूँ व अधेडवस्था के दौर से गुजर रहा हूँ । इस पड़ाव तक पहुंचने के लिए अनगिनत बार अपनी अंतरात्मा से समझौता कर मैंने अपने सम्मान/आत्म सम्मान को संकट में डाल, मध्य मार्ग का चयन कर धूल धूसरित होते हुए प्रत्यक्ष देखा है। उम्र के इस पड़ाव तक आते–आते व्यक्ति को परिवार, रिश्तेदार, दोस्तों व कार्यालय में अपने आत्म सम्मान को ताक पर रख कई अनचाहे समझौते करने पड़ते हैं जो रिश्ते में सामंजस्य बैठाने व कार्यस्थल पर सफलता के महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होते हैं। परन्तु इस प्रकार सफलता प्राप्ति के उपरांत भी मन में संतुष्टि का भाव सदैव नदारद ही रहता है व निरंतर इसकी लालसा बनी रहती है।

एक प्रचलित धारण है कि सम्मान उन शब्दों में नहीं है जो कि आपकी उपस्थिति में कहे गए हैं अपितु उन शब्दों में है जो आपकी अनुपस्थिति में कहे गए हैं। अतः इस अवधारणा को ध्यान में रखकर यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि इतने समझौते करने के उपरान्त भी कहीं घर व घर से बाहर मेरे दबे कुचले सम्मान का अवमूल्यन हमारी अर्थव्यवस्था व रूपये की भांति तो नहीं हो रहा है। यदि ऐसा है तो ऐसे अथक प्रयास करना जो इसे महंगाई की भांति तेजी से बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो।

इस क्रम में, मैंने परिजनों की सभी मांगो को अनदेखा, अनसुना कर शाम की बजाय देर रात घर आना शुरू कर दिया। परंतु अपेक्षित परिणाम न मिलने से हताशा की पीड़ा की चुभन हई। अपनी सामाजिक स्थिति का आकलन करते हुए इस बात की अनुभूति हुई कि गली में विचरते श्वान जो दिन मे पूंछ हिलाकर स्वागत करते थे भी रात में भौंककर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर रहे थे। यह उन निरीह, निस्वार्थ प्राणियों द्वारा दी गई सांकेतिक सीख थी कि समय और परिस्थितियां बहुत कछ निर्धारित करती है। सप्रयास सम्मान की लालसा करना उचित नहीं होता। कोई आपका सम्मान किसी लालच, भय या शर्म से करे तो आप मन में स्वयं को सम्मनित महसूस नहीं कर पायेंगे।

अतः अनअपेक्षित परिणाम से आहत होकर इस धारणा को बल मिला कि आधुनिकता व भोतिकतावादी सोच से परिपूर्ण पीढ़ी का अत्यधिक जुड़ाव तकनीक से होने के कारण हम कहीं न कहीं अपनत्व व रिश्तों का महत्व खो रहे हैं। केवल में ही नहीं अपितु पूरा सामाजिक ढांचा ही उस सम्मान को तलाश रहा है जिसका वह हकदार है, जो भौतिकतावदी अंधी दौड़ में विस्मृति के अंधेरों में खो गया है।

राजकुमार अरोड़ा
सहायक निदेशक (वि एवं प्रशा.)

जिंदगी के कुछ लम्हें

जितनी बार पढ़ो उतनी बार
सबक दे जाती है ये कहानी।

जीवन के 20 साल हवा की तरह उड़ गए ।
फिर शुरू हुई नौकरी की खोज ।
ये नहीं वो, दूर नहीं पास ।
ऐसा करते करते 2-3 नौकरियाँ छोड़ते एक तय हुई।
थोड़ी स्थिरता की शुरुआत हुई।

फिर हाथ आया पहली तनख्वाह का चेक।
वह बैंक में जमा हुआ और शुरू हुआ अकाउंट में जमा होने वाले शून्यों का अंतहीन खेल।

2-3 वर्ष और निकल गए।
बैंक में थोड़े और शून्य बढ़ गए। उम्र 25 हो गयी।

और फिर विवाह हो गया। जीवन की राम कहानी शुरू हो गयी। शुरू के एक 2 साल नर्म, गुलाबी, रसीले, सपनीले गुजरे । हाथो में हाथ डालकर घूमना फिरना, रंग बिरंगे सपने। पर ये दिन जल्दी ही उड़ गए।

और फिर बच्चे के आने की आहट हुई। वर्ष भर में पालना झूलने लगा। अब सारा ध्यान बच्चे पर केन्द्रित हो गया। उठना बैठना खाना पीना लाड दुलार ।

समय कैसे फटाफट निकल गया, पता ही नहीं चला।
इस बीच कब मेरा हाथ उसके हाथ से निकल गया, बाते करना घूमना फिरना कब बंद हो गया दोनों को पता ही न चला।

बच्चा बड़ा होता गया। वो बच्चे में व्यस्त हो गयी, मैं अपने काम में । घर और गाडी की क़िस्त, बच्चे की जिम्मेदारी, शिक्षा और भविष्य की सुविधा और साथ ही बैंक में शून्य बढाने की चिंता। उसने भी अपने आप को काम में पूरी तरह झोंक दिया और मैंने भी।
इतने में मैं 35 का हो गया। घर, गाडी, बैंक में शुन्य, परिवार सब है फिर भी कुछ कमी है ? पर वो है क्या समझ नहीं आया। उसकी चिड चिड बढती गयी, मैं उदासीन होने लगा।

इस बीच दिन बीतते गए। समय गुजरता गया। बच्चा बड़ा होता गया। उसका खुद का संसार तैयार होता गया। कब 10 वीं आई और चली गयी पता ही नहीं चला। तब तक दोनों ही चालीस बयालीस के हो गए। बैंक में शुन्य बढ़ता ही गया।

एक नितांत एकांत क्षण में मुझे वो गुजरे दिर याद आये और मौका देख कर उससे कहा अरे "जरा यहां आओ, पास बैठो, चलो हाथ में हाथ डालकर कहीं घूम के आते हैं।"

उसने अजीब नजरो से मुझे देखा और कहा कि तुम्हे कुछ भी सूझता है यहाँ ढेर सारा काम पड़ा है है तुम्हें बातों की सूझ रही है।
कमर में पल्लू खोंस वो निकल गयी।

तो फिर आया पैंतालिसवा साल, आँखों पर चश्मा लग गया, बाल काला रंग छोड़ने लगे, दिमाग में कुछ उलझने शुरू हो गयी।

बेटा उधर कॉलेज में था, इधर बैंक में शुन्य बढ़ रहे थे। देखते ही देखते उसका कॉलेज ख़त्म। वह अपने पैरो पे खड़ा हो गया। उसके पंख फूटे और उड़ गया परदेश।

उसके बालो का काला रंग भी उड़ने लगा। कभी कभी दिमाग साथ छोड़ने लगा। उसे चश्मा भी लग गया। मैं खुद बूढा हो गया। वो भी उमरदराज लगने लगी।

दोनों पचपन से साठ की और बढ़ने लगे। बैंक के शून्यों की कोई खबर नहीं। बाहर आने जाने के कार्यक्रम बंद होने लगे।

अब तो गोली दवाइयों के दिन और समय निश्चित होने लगे। बच्चे बड़े होंगे तब हम साथ रहेंगे सोच कर लिया गया घर अब बोझ लगने लगा। बच्चे कब वापिस आयेंगे यही सोचते सोचते बाकी के दिन गुजरने लगे।

एक दिन यूँ ही सोफे पे बेठा ठंडी हवा का आनंद ले रहा था। वो दिया बाती कर रही थी। तभी फोन की घंटी बजी। लपक के फोन उठाया। दूसरी तरफ बेटा था। जिसने कहा कि उसने शादी कर ली और अब परदेश में ही रहेगा।

उसने ये भी कहा कि पिताजी आपके बैंक के शून्यों को किसी वृद्धाश्रम में दे देना। और आप भी वही रह लेना। कुछ और ओपचारिक बातें कह कर बेटे ने फोन रख दिया।

उसकी दिया बाती खत्म होने को आई थी। मैंने उसे आवाज दी और सोफे पर आकर बैठ गया।
" चलो आज फिर हाथो में हाथ लेके बात करते हैं"
वो तुरंत बोली ।"अभी आई "

मुझे विश्वास नहीं हुआ। चेहरा ख़ुशी से चमक उठा।आँखे भर आई। आँखों से आंसू गिरने लगे और गाल भीग गए । अचानक आँखों की चमक फीकी पड़ गयी और मैं निस्तेज हो गया। हमेशा के लिए !!

उसने शेष पूजा की और मेरे पास आके बैठ गयी बोलो क्या बोल रहे थे"?"
लेकिन मेने कुछ नहीं कहा। उसने मेरे शरीर को छू कर देखा। शरीर बिलकुल ठंडा पड गया था। मैं उसकी और एकटक देख रहा था।

क्षण भर को वो शून्य हो गयी।
" क्या करूं ? "

उसे कुछ समझ में नहीं आया। लेकिन एक दो मिनट में ही वो चेतन्य हो गयी। धीरे से उठी पूजा घर में गयी। एक अगरबत्ती की। इश्वर को प्रणाम किया। और फिर से आके सोफे पे बैठ गयी।

मेरा ठंडा हाथ अपने हाथो में लिया और बोली
"चलो कहाँ घुमने चलना है तुम्हे ? क्या बातें करनी हैं तुम्हे ?" बोलो !!
ऐसा कहते हुए उसकी आँखे भर आई .....!!
वो एकटक मुझे देखती रही। आँखों से अश्रु धारा बह निकली। मेरा सर उसके कंधो पर गिर गया। ठंडी हवा का झोंका अब भी चल रहा था।

क्या ये ही जिन्दगी है ? नहीं.

सब अपना साथ लेके आते हैं "नसीब"
इसलिए कुछ समय लिए भी निकालो । "अपने"
"जीवनभी अपने रखो "तरीके" अपना है तो जीने के "।

(स्त्रोत : सोशल मीडिया)

सोच

राजेश मक्कड़
सहायक निदेशक (वि एवं प्रशा.)

कल मेरे एक मित्र ने दूसरे को पूछा
2020 वर्ष ने हमें क्या दिया ?
क्या दे रहा है ?
क्या देगा ?

वह बोला,
कोरोना, चक्रवात, व्यवसायनौकरी में नुकसान -, मानसिक तनाव, आत्महत्या .
चीन, पाकिस्तान के साथ युद्ध जैसी स्थिति, छोटे देश नेपाल द्वारा धमकाना!

दूसरा बोला,
नहीं दोस्त, गलत सोच रहे हो...
सच में देखा जाए तो 2020 ने हमें संघर्ष करना सिखाया है
देश में स्वच्छता कितनी जरूरी है, ये सिखाया
सावधानी बरतना
एक दूसरे की मदद करना
प्रकृति को सहेजना
अन्न की कीमत
मानसिक संतुलन
अनेकों नये मेनू
विविध तर्कपूर्ण लेख और पोस्ट...
मन को गुदगुदा देनेवाली अनेकों हास्य और व्यंगात्मक पोस्ट
इस साल ने हमें बताया कि कम खर्च में शादी और कम लोगों में भी अंतिम संस्कार हो सकता है ...
इसी वर्ष ने बिना मेकअप के ओरिजिनल चेहरे दिखाये
घर में रहने के लिए आवश्यक संयम दिया
घर के लोगों के साथ बातचीत करने का बहुमूल्य अवसर दिया
समय आने पर पासपड़ोसी-, अपने रिश्तेदारों से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं, ये बताया
प्रदूषण में कमी
झर झर बहने वाली साफ नदिया
समुन्द्र में साफ नीला पानी

साफ आसमान
भविष्य में आनेवाली किसी भी बड़ी विपदा से निपटने की मानसिक तैयारी करायी
यही सब तो सिखाया है इस 2020 साल ने.
इस अवधि में हमने कई महत्वपूर्ण लोगों को अवश्य खोया ...
लेकिन अमीरी...गरीबी का भेद मिटा दिया इस साल ने-
अबतक हम जिन्हें अपने पूजास्थलों पर देखते थे, उस परमशक्ति ईश्वर का दर्शन कराया है इस साल ने.
जीवन का सही मूल्य समझा है हमने ...
हमने जाना, सही अर्थों में जीना कितना आसान है ...
हमारी सही क्षमता पहचानने का और सकारात्मक विचारों को अपनाने का सुनहरा मौका मिला ...

क्या इससे ज्यादा कुछ और मिल सकता है इस साल में सबसे बड़ी सोच हर परिस्थिति में संयम, समभाव व्यवहार, मितव्ययता, परोपकार, सहृदयता, अपनी आत्मा का उत्त्थान, बड़े बड़े खर्चीले प्रदर्शनों आडंबरों से मुक्ति और हर कार्य मे सकारात्मक सोच इससे बड़ी ओर क्या बात सोचेंगे आप
केवल इसी साल में।

(स्त्रोत : सोशल मीडिया)

हरि सिंह सैनी
परामर्शदाता (वि. एवं प्रशा.)

हवाएं

हवाओं में कुछ हलचल है, थोड़े सहम जाइए ।
तूफान आने का अंदेशा है, थोड़े खबरदार हो जाइए ।

बुझ ना जाए बेवक्त कहीं, जलते चिराग़ ये हवाओं से,
इल्तिज़ा है सबसे यही कि, थोड़े होशियार हो जाइए ।

हरने आई ये बद हवाएं, चैन ओ सुकून जिंदगी का,
सब कुछ छोड़ के पहले, ख़ुद के पहरेदार हो जाइए ।

उड़ने लगी रंगत देखो, इन कायनाती फिज़ाओं की,
कैद कर के ख़ुद को अब, घर मे गुलज़ार हो जाइए ।

अजब है ये जंग जिंदगी की, जीत ना सकते दौड़ के,
ठहर के अपने मुक़ाम पे, जीत के दावेदार हो जाइए ।

सी.पी.एस.यादव
सहायक निदेशक (पी–)

कोरोना वाइरस – महामारी

कोरोना अर्थात व्रताकार प्रकाशशील पदार्थ जिसके प्रकाश से हर जगह प्रकाश उत्पन्न हो जाए जैसे सूर्य के पहले चंद्रमा आ जाने से जो तीव्र प्रकाश उत्पन्न होता है ठीक उसी प्रकार विश्व में भी एक कोरोना फैला परन्तु यह कोरोना रूपी प्रकाश मानवजाति के हित में नहीं रहा अपितु यह एक वाइरस के रूप में फैला जिसका परिणाम बहुत ही घातक सिद्ध हुआ।

17 नवम्बर 2019 को यह वाइरस पहली बार चीन के बुहान शहर में एक 55 वर्षीय बुजुर्ग व्यक्ति में पाया गया। यह वाइरस चीन के वुहान शहर से निकलकर पुरे विश्व में देखते ही देखते फैल गया। यह वाइरस एक इंसान से दूसरे इंसान तक मिलने जुलने, खांसी, छीकने, छूने और एक दूसरे के संपर्क में आने से ही फैल रहा है। इस वाइरस ने खुद को इतना शक्तिशाली बना लिया है कि यह कुछ दिनों तक निर्जीव वस्तुओं पर भी ठहर सकता है।

यह तो रही विश्व की बात और यदि हम भारत की बात करें तो वाइरस भारत में हवा में गंध मिलने से भी ज्यादा तेजी से फैला। इसके चलते सब कुछ ऐसे रूका कि जैसे कोई मशीन रूक गयी हो। इसके रोकथाम के लिए हमारी सरकार को देशेवासियों के हित में बहुत सारे कठोर कदम उठाने पडे जैसे सरकार द्वारा लॉकडाउन लगाया गया ताकि लोग घरों से बाहर न निकले जिससे लोग एक दूसरे के नजदीक न आये तथा यह रोग कम फैले। सभी प्रकार की यात्राओं के साधन जैसे रेल सेवा, मैट्रो सेवा, बस सेवा, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय हवाई यात्राएं भी बंद करवा दी गयी। यहां तक की बच्चों की सुरक्षा के लिए स्कूल, कॉलेज तथा परीक्षाएं एवं आफिस तक भी बंद करवाने पडे क्योंकि सरकार द्वारा लोगो को यही सुझाव दिया गया कि यह वर्ष कमाने का नहीं अपितु अपनी जान बचाने का है।

परन्तु अगर हम इसी का दूसरा पहलू देखे तो इसका आम इंसान के जीवन पर बहुत ही गहरा एवं बुरा प्रभाव पड़ा है। इस लॉकडाउन के तहत बहुत सारे व्यक्तियों का रोजगार छिन चुका है। आर्थिक तंगी इतनी बढ़ गई है कि लोगों के पास दो वक्त की रोटी के भी पैसे नहीं है। परन्तु सरकार ने सभी गरीबों को मुक्त भोजन देकर उन्हें मानसिक परेशानी से बचा लिया अन्वयथा लोग भूखे मरतें।

लॉकडाउन अब लगभग खुल ही गया है परन्तु विश्व में आंकडे के अनुसार अब भारत कोरोना वाइरस के रोगियों में दूसरे स्थान पर आता है जोकि हमारे लिये चिंता की बात है। असल मायनों में लॉकडाउन से जागरूकता की अधिक आवश्यकता अब है जब रोजाना लगभग एक लाख लोग इस बीमारी की चपेट में आते जा रहे हैं। इस रोग की अभी कोई दवाई भी बाजार में उपलब्ध नहीं हो पाई परन्तु इस पर तीव्र गति से काम जारी है।

आत्मरक्षा, स्वास्थ्य की सुरक्षा एवं अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर अब हमें पूर्ण ध्यान देना होगा क्योंकि अब यही एकमात्र उपाय शेष बचा है। यदि हम सब सरकार द्वारा दिये गये निर्देशानुसार चलेगें तो हम सब मिलकर इस कोरोना महामारी पर विजय प्राप्त कर सकेंगें।

राहुल चराया
सी.ए.

बेटियां

गंगा की निर्मल नीर सी होती है बेटियां
हम सबकी तकदीर सी होती हैं बेटियां।

बेटियां हमारा अहोभाग्य है
बनती हर घर का सौभाग्य है
बेटियां होती घर की रौनक
यह तो हर परिवार की है दौलत।

बेटियां हर दिन नया सेवरा है
इनके बिना घर तो सिर्फ बसेरा है
बेटियां घर को सजाती संवारती है
त्यौहारों में चार चांद लगाती है।

बेटी के प्यार को कभी आजमाना नहीं
वह फूल है, उसे कभी रूलाना नहीं
पिता का तो गुमान होती है बेटी
जिन्दा होने की पहचान होती है बेटी।

उसकी आंखे कभी नम न होने देना
उसकी जिन्दगी से कभी खुशियां कम न होने देना
ऊँगली पकड़ कर कल जिसको चलाया था तुमने
फिर उसको ही डोली में बिठाया था तुमने।

बहुत छोटा सा सफल होता है बेटी के साथ
बहुत कम वक्त के लिये वह होती है हमारे पास
असीम दुलार पाने की हकदार है बेटी
समझो भगवान का आशीर्वाद है बेटी।।

मोहित माथुर
कार्यकारी सहायक (तकनीकी)

एक पिता का फैसला

क्या बताऊं मम्मी, आजकल तो बासी कड़ी में भी उबाल आया हुआ है। जबसे पापाजी रिटायर हुए हैं, दोनों लोग फिल्मी हीरो हीरोइन की तरह दिन भर अपने बगीचे में ही झूले पर विराजमान रहते... हैं। न तो अपने बालों की सफेदी का लिहाज है ना बहू बेटे का। इस उम्र में दोनों मेरी ओर राहुल की बराबरी कर रहे हैं। ठीक है मां मैं आपसे बाद में बात करती हूं शायद सासू मां आ रही है।

सासू मां ने बहू की बातें कमरे के बाहर सुन ली थी, पर नजरअंदाज करते हुए खामोशी से चाय सोनम को दे दी। सासू मां, बहू सोनम को चाय देने के पश्चात पति अशोक जी के लिए चाय ले जाने लगी और बहू की बातों को नजर अंदाज कर दिया।

पति अशोक जी के रिटायर हो जाने के बाद उनकी यही दिनचर्या हो गई थी। आजकल सासू मां प्रभा जी अपने घर में सबसे खूबसूरत बगीचे में अपने पति के झूले में बैठ कर उनको कंपनी देती है। प्रभाजी ने सारी उम्र अपने बच्चों के लिए लगा दी थी। कोठीनुमा घर अशोक और प्रभा के जीवन भर का सपना था जो उन्होंने बड़ी मेहनत से साकार किया था। पहले अशोक और प्रभा इस मनमोहक जगह पर कम समय ही बैठ पाते थे। पति अशोक बड़े जिंदादिल शब्दों में कहते थे कि पार्टनर रिटायरमेंट के बाद दोनों इसी झूले पर साथ बैठेंगे और चाय का आनंद लिया करेंगे। बच्चों के कैरियर के लिए बहुत कुछ बलिदान करना पड़ा, खैर अब बेटा अच्छी नौकरी में था और बेटी अपने घर जा चुकी थी।

रिटायरमेंट के बाद अशोक जी को भी घर में रहना अच्छा लग रहा था। लेकिन बहू सोनम अपने पति राहुल को उसके माता पिता के लिए ताने देने का कोई मौका न छोड़ती। उसने उस कोने के बगीचे से छुटकारा पाने के लिए राहुल को एक रास्ता सुझाते हुए कहा क्यों ना हम बड़ी कार खरीद लें राहुल विचार अच्छा है। पर हम रखेंगे कहां एक कार रखने को ही तो जगह है घर में। जगह तो है, वो गार्डन तुम्हारा जहां आजकल दोनों लवबर्डस बैठते है। सोनम व्यांगात्मक स्वर में बोली।

अगले दिन राहुल कुछ कार की तस्वीरों के साथ अपने पिता के पास गया और बोला मैं और सोनम बड़ी कार खरीदना चाहते हैं। पिता अशोक बोले बेटा एक कार तो पहले ही घर में है। फिर उस नई गाड़ी को रखेंगे कहां, राहुल बोला ये बगीचे को गैराज बनवा लेंगे वैसे भी सोनम से तो इसकी देखाभाल होने से रही और मां कब तक देखभाल करेंगी। इन पेड़ों को कटवाना ठीक रहेगा। यह सुनकर प्रभा तो वहीं कुर्सी पकड़कर बैठ गई और अशोक जी क्रोध को काबू में करते हुए बोले मुझे तुम्हारी मां से बात करके थोड़ा सोचने का मौका दो। राहुल चिड़चिड़ा कर बोला मम्मी से क्या पूछना इस जगह का इस्तेमाल भी क्या है ? आप दोनों दिनभर इस जगह झूले पर बैठे रहते है। यह भी नहीं सोचा कि चार लोग क्या कहेंगे। इस

उम्र में मम्मी के साथ बैठने की बजाय आप अपनी उम्र के लोगों में उठा बैठा करो तो ज्यादा अच्छा लगेगा। राहुल दनदनाते हुए अन्दर चला गया। अन्दर सोनम की बड़बड़ाहट जारी थी। अशोक जी कड़वी सच्चाई का एहसास कर रहे थे। अपने बेटे के मुह से ऐसी बातें सुनकर माता पिता दोनों का दिल भर आया था और वो बुरी तरह टूट चुके थे। रिटायरमेंट को अभी कुछ ही समय हुआ था पिछली जिन्दगी भागमभाग में बीती और बच्चों के लिए सुख साधन जूटाने में निकल गई। अशोक जी पूरी रात कुछ सोचते रहे, लेकिन सुबह जब उठे तो प्रसन्न थे। वे रसाई में गये और प्रभा जी ने दोनों के लिए चाय बनाई। आपने क्या सोचा प्रभा ने रोआंसे लहजे में पूछा। मैं सब ठीक कर दूंगा अशोक बोले, दिन भर सब ठीक रहा लेकिन शाम को अपने घर के बाहर टू लेट का बोर्ड लगा था। जब राहुल ने देखा तो भौंचके स्वर में अपने पिता से बोला, पापा माना घर बड़ा है ये टू लेट का बोर्ड किसलिए ? अशोक बोले अगले महीने मेरे स्टाफ के गुप्ता जी रिटायर हो रहे हैं और वो इस घर में अपनी पत्नी के साथ रहेंगे। पर कहां, हैरान राहुल ने प्रश्न किया ? तुम्हारे पोर्शन में अशोक जी सामान्य स्वर में बोले। राहुल अब हकलाते हुए बोला और उसने अपने पिता से पूछा "और हम लोग"? पिता अशोक बोले तुम्हें इस लायक बना दिया है तो अगले महीने तक कोई मकान देख लेना या कंपनी के फ्लैट में रह लेना। अपनी उम्र के लोगों के साथ। अब हम भी अपनी उम्र के लोगों के साथ उठा बैठा करेंगे, अशोक जी बोले। तुम्हारी मां की सारी उम्र सबका लिहाज करने में निकल गई अब लिहाज की सीख तुम सबसे लेना बाकी रह गई थी। जब हम तुम दोनों को साथ देखकर खुश रह सकते हैं तो तुम को हम दोनों से दिक्क्त क्यों है? इस मकान को घर तुम्हारी मां ने बनाया है। ये पेड़ फूल तुम्हारे लिए मांगी गई ना जाने कितनी मनौतियों के साक्षी हैं तो ये कोना छीनने का अधिकार मैं किसी को भी नहीं दूंगा। पापा आप तो सिरियस हो गए, राहुल बोला उसके स्वर अब नम्र हो चले थे। पिता अशोक बोले तुम्हारी मां ने जाने कितने कष्ट सहकर कितने त्याग करके मेरा साथ दिया इसलिए ये बगीचा ही नहीं पूरा घर तुम्हारी मां का ऋणी है। जब मंदिर में ईश्वर जोड़े में अच्छा लगता है तो मां बाप साथ में बुरे क्यों लगते हैं ? जिन्दगी हमे भी तो एक बार मिली है। इसलिए हम इसे अपने हिसाब से जिएंगे। अशोक जी का ये फैसला हम सब को एक शिक्षा के रूप में देखना चाहिए कि ईंट और पत्थर के मकान को हमारे माता पिता अपनी मेहनत और न जाने कितने कष्ट सहकर घर बनाते हैं । उस पर पहला अधिकार उन्हीं का है और उन्हें भी अपना जीवन अपने ही अंदाज में पूरे सम्मान के साथ जीने देना चाहिए।

जनरेशन गेप

पूनम जे देसाई
कार्यकारी सहायक (पी– I)

नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच विचारों के मतभेद की समस्या काफी पुरानी है। नई पीढ़ी सिर्फ चलना चाहती है और इसके लिए नई पीढ़ी गिरने को भी तैयार है। दूसरी तरफ पुरानी पीढ़ी चाहती है कि नई पीढ़ी मतलब उनके बच्चे बिना गिरे ही उनके अनुभव से चलना सीख जाए और जिंदगी में सफलता प्राप्त करें।

दोनों ही पीढ़ी अपनी–अपनी जगह पर सही है पर दोनों पीढ़ी को एक सत्य को स्वीकार करना होगा। इसके लिए पुरानी पीढ़ी को ये समझने की जरूरत होगी कि अनुभव अपने होते हैं किसी से उधार नहीं लिये जाते और बिना गिरे हम चलना तो सीख सकते हैं पर संभलना नहीं। हम गिरेंगे तभी तो उठने का हुनर सीखेंगे।

वहीं दूसरी ओर यह भी उतना ही सत्य है कि किसी सीढ़ी को हम कितना ही मॉडन कर लें उसे इलेक्ट्रॉनिक बना ले, पर ऊपर तक पहुंचने के लिए शुरूआत तो पहली सीढ़ी में ही करनी पड़ती है और यह पहली सीढ़ी ही हमारे बड़े अर्थात् माता–पिता का अनुभव होता है तो उन्होंने जिंदगी की जीते जीते उपर उठकर नीचे गिरकर, अच्छी बुरी हर परिस्थिति में रहकर कमाया है।

ऐसा सोच समझकर करने से दोनो पीढ़ी के बीच के मतभेदों को समाप्त कर सकता है। हम सबको बचपन के दिन याद आते ही हैं, उस बचपन को याद करके हम बहुत खुश भी होते हैं । बचपन के दिनों में जब पापा साईकिल चलना सिखाया करते थे और पीछे से सीट को पकड़ लिया करते थे ताकि हम गिर न जायें और हम चाहते थे कि पापा सीट को छोड़ दें और हम खुद साईकिल चलायें। पापा को बोलते थे कि पापा प्लीस सीट को छोड़ दो और जब पापा सीट को छोड़ देते थे और हम बिना गिरे साईकिल चला लेते थे। हम कितना ज्यादा खुश होते थे कि बहुत ही गर्व से अपने सभी दोस्तों को बताते थे कि आज तो साईकिल हमने बिना पापा की मदद के अकेले ही चलाई। पापा ने सीट छोड़ दी थी और मैं गिरी भी नहीं। इन सबमें जितनी खुशी हमें होती थी उससे ज्यादा खुशी पापा को हुई थी हम बिना उनके सहारे के आगे बढ़ रहे हैं। अर्थात् हमारे बड़े तब तक ही हमें समझाते है जब तक हम खुद चलने के लायक न हो जाए। इसलिए हमें अपने बड़ों को समझना चाहिए और इस जनरेशन गेप को हमेशा के लिए हटा देना चाहिए।

एक बार सुनील नाम का एक युवा अपने माता–पिता को अपने साथ अपने ऑफिस की पार्टी में में लेकर गया। पार्टी में बहुत लोग आपने परिवार के साथ आये हुए थे । पार्टी अच्छी सी चल रही थी । सुनील के माता–पिता भी पार्टी में एक कोने में बैठकर खुश थे अपने बेटे को पार्टी में खुश देखकर। थोड़ी देर में डिनर का समय आ गया। सभी लोगों ने खाना खाना शुरू कर दिया। तभी सुनील अपने माता–पिता के पास आया और उनको खाना खाने के लिए बोला। सुनील ने खाना खाना शुरू कर दिया उसने देखा कि मेरे माता–पिता काफी देर होने के बाद भी खाना शुरू नहीं किया। सुनील ने अपने माता–पिता से कहा आप भी खाना खा लो। पिता बोले बेटा कांटा छूरी से हमसे नहीं खाया जाएगा। फिर भी पिता ने कोशिश करके चम्मच से खाना शुरू किया तो चम्मच नीचे गिर गई। तब सुनील अपने माता–पिता पर गुस्सा होते हुए बोला कि आपको कुछ नहीं आता, आप

हाथ से ही खा लो । लोगों ने सुनील को गुस्से में बोलते हुए सुना और देखने लगे। सुनील के पिताजी ने हाथ से खाना खाना शुरू कर दिया। पिता की आंखे शर्म से झुक गई और सुनील को भी अच्छा नहीं लगा। फिर सुनील अपने माता–पिता से बोला चलो घर चलें। रास्ते में कुछ खाने को ले लेंगे आप लोग वो खा लेना।

क्या सुनील ने यह सही किया अपने माता–पिता के साथ ? अगर उसकी जगह हम होते तो क्या करते ? अपने माता–पिता को पहले से ही चाकू छूरी से खाना कैसे खाते हैं सिखाकर लेकर जाते यू ंना उनका अपमान करते।

उनको हाथों से खाना खाने देते इस बात पर शर्मिंदा नही होते कि उनको कांटे छुरी से खाना नहीं आता।

पिता की चम्मच से गिर जाने पर चम्मच उठाकर उनको दे देते उनका अपमान नहीं करते। बल्कि बड़ी विनम्रता से उन्हें कहते आप आराम से खाओ।

सुनील को जब पता था कि खाना चाकू छूरी से खाना उनके लिए मुंश्किल है तो प्लेट में ऐसी चीजें देते जो चाकू छूरी के बिना खाई जा सकती थी।

अपने पिता के बारे में सोचें कि आप ऐसी परिस्थिति में होते तो आप क्या करते। ये भी जरूर सोचना कि क्या यह सही था कि उनके माता पिता अपनी आदत जो कि 60 साल पुरानी हो उसको बदल दे या फिर हमको अपने माता –पिता का साथ देना चाहिए कि जैसे उनको पसंद हो वो वैसा ही करें। यह भी हो सकता है कि हम खुद माता पिता की तरह उनके साथ खाना खाकर उनकी खुशी देते और सबकी नजरों में एक मिसाल बनते। ऐसा करके हम जनरेशन गेप को कम कर सकते हैं।

ऐसा बहुत बार होता है कि हम लोग दिखावटी दुनिया के कारण अपने माता पिता का साथ नहीं देते उन्हें अकेला छोड़ देते हैं। पर हम लोगों को याद रखना चाहिए कि माता पिता ने हमारा पालन पोषण किया है। हमको माता – पिता का हमेशा साथ देना चाहिए।

दो पीढ़ी के विचार जब असमान होते हैं तो जनरेशन गेप होता है। ठीक उसी तरह दो पीढ़ी के विचार मिल जाये तो जनरेशन गेप को बढ़ाया जा सकता है। इसलिए ऐसे कदम उठाये जिससे जनरेशन गेप को आगे बढ़ाया जा सके।

कालापानी

सोनम शर्मा
उत्पादन प्रबंधक
आईटी विभाग

आज़ादी के परवानों की सुन लो जितनी कहानी,
मर्म दिल नम आँखों से याद आएगा कालापानी,
कितने दिव्य लोग इस धरती पर हो गए रूहानी,
बचपन से इस कहानी को सुनाती दादी-दादी
देश व्यथित था,फिरंगी अत्याचारी ,राष्ट्र हीन था ,
घड़ा भरा खडे हो गए जो थे पंजाबी,बिहारी ,गुजराती ,
देशप्रेम की राह में सब आगे बढ़ बढ़ आये,
देश हमारा अपना है,सबने जयकार लगाए ,
अंग्रेजों को भय हुआ,और हुई बैचैनी ,
देश निकाला दे दिया भेजा कालापानी
बटुकेश्वर दत्त सोहन सिंह, वामन राव जोशी,
आप सबके बलिदान देश में लाये सरफरोशी,
बाबरराव,मौलवी लियाक़त अली ,विनायक सावरकर ,
अग्रेजों के कटु हृदय में आपने मचा दी खलबली,
निस्वार्थ सेवा से आज़ादी मिलेगी,न चलेगी मनमानी ,
युग युग अमर रहे आप दीवान सिंह कालेपानी
भाई परमानंद ऐ फजल आप सब वीरों ने
आजादी दिलवाई हमें आप सुपूत रणधीरों ने
महावीर सिंह जी आप अन्न जल त्याग कर,
देश में इक मशाल जला दी अपनी ललकार पर,
देश को नयी दिशा देकर हर कुर्बानी दे कर
तेरे इस बलिदान को नमन ऐ कालापानी|
उस भीषण युग में तुम थे सत्य के प्रमाण,
देश को सदैव रहेगा तुम पर गौरव,अभिमान ,
इतनी शक्ति दी तुमने देश के महा,आन्दोलन को-
मूक रहे पर शब्द नहीं हैंतुम्हारे नेत्रों के बोलों को ,
इतने महान, इतने दिव्य हो तुम झेल गए सुनामी
शत शत नमन तुम्हारे चरणों में ऐ मेरे कालापानी|

सबसे बड़ा पुण्य

रामकृष्ण पोखरियाल
निजी सहायक (वि एवं प्रशा.)

एक राजा बहुत बड़ा प्रजापालक था, हमेशा अपनी प्रजा के हित की सोचता था। वह इतना कर्मठ था कि अपना सुख, आराम सब छोड़कर जनहित के कल्याण के लिए ही चिंतित रहता था।

एक सुबह राजा वन की तरफ भ्रमण करने के लिए जा रहा था कि उसे एक देव के दर्शन हुए राजा ने देव को प्रणाम करते हुए .उनका अभिनन्दन किया और देव के हाथों में एक लम्बी चौड़ी पुस्तक देखकर उनसे पूछा महाराज, आपके हाथ में यह क्या है?

देव बोले राजन यह हमारा बही खाता है। जिसमें सभी भजन करने वालों के नाम हैं।

राजा ने निराशायुक्त भाव से कहा" -कृपया देखिये तो इस किताब में कहीं मेरा नाम भी है या नहीं?"

देव महाराज किताब का एकएक पृष्ठ उलटने लगे-, परन्तु राजा का नाम कहीं भी नजर नहीं आया .

राजा ने देव को चिंतित देखकर कहा महाराज आप चिंतित ना हों, आपके ढूंढने में कोई भी कमी नहीं है। वास्तव में यह मेरा दुर्भाग्य है इस बही खाते में मेरा नाम ही नहीं है। अगले दिन राजा के मन में आत्म ग्लानि हुई और फिर पुन: परोपकार की भावना के लिए दूसरी सेवा करने में लग गए। फिर राजा सुबह उठे और वन की तरफ टहलने के लिए निकले तो देखा कि वही देव महाराज के दर्शन हुए इस बार भी उनके हाथ में एक पुस्तक थी। इस पुस्तक के रंग और आकार में बहुत अंतर था और यह पहली वाली से काफी छोटी भी थी। राजा ने फिर उन्हें प्रणाम करते हुए पूछा "महाराज आज कौन सा बही खाता आपने अपने हाथों में लिया हुआ है"। देव ने कहा 'महाराज आज के बही खाते में उन लोगों का नाम लिखा है जो ईश्वर को सबसे अधिक प्रिय हैं।

राजा ने कहा कितने भागयशाली होंगे वे लोग जो निश्चित ही वे दिन रात भागवत और कथा में लीन रहते हैं। क्या इस पुस्तक में कोई मेरे राज्य का भी नागरिक है?

देव महाराज ने बहीखाता खोला , और ये क्या , पहले पन्ने पर पहला नाम राजा का ही था। राजा ने आश्चर्यचकित होकर पूछा" -महाराज, मेरा नाम इसमें कैसे लिखा हुआ है, मैं तो मंदिर भी कभी कभार ही जाता हूँ- देव ने कहा राजन इसमें आश्चर्य की क्या बात हे? जो लोग निष्काम होकर संसार की सेवा करते हैं, जो लोग संसार के उपकार में अपना पूरा जीवन अर्पण

करते हैं। ये जो सेवा, परोपकार, लोगों की भलाई ही सबसे बड़ी पूजा है। वो सारे गुण आपमें मौजूद थे इसलिए इस बहीखाते में आपका पहला नाम है।

देव ने वेदों का उदाहरण देकर कहा "कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छनं समा: एवान्त्वाप नान्यतोअस्ति व कर्म लिप्यते नरे" अर्थात कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की ईच्छा करो,, तो कर्मबंधन में लिप्त हो जाओगे राजन उन्हें खुशामद नहीं भाती बल्कि भगवान दीनदयालु हैं। वो कर्म करो जो दुखियों का हित-दीन, सच्ची भक्ति तो यही है कि परोपकार करो और अनाथ, निर्धन आदि की यथाशक्ति सहायता और सेवा करो यही परम भक्ति है।

राजा को आज देव के माध्यम से बहुत बड़ा ज्ञान मिल चुका था और अब राजा भी समझ गया कि परोपकार से बड़ा कुछ भी नहीं और जो परोपकार करते हैं वही भगवान के सबसे प्रिय होते हैं। जो व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से लोगों की सेवा करने के लिए आगे आते हैं, परमात्मा हर समय उनके कल्याण के लिए यत्न करता है। हमारे पूर्वोजों ने कहा है कि दूसरों की सेवा को ही पूजा समझकर कर्म करना चाहिए, परोपकार के लिए अपने जीवन को सार्थक बनाना ही सबसे बडा पुण्य है और जब आप भी ऐसा करेंगे तो स्वत: ही आप ईश्वर के प्रिय भक्तों में शामिल हो जाएंगे।

पवन
स्टोर अटैंडेंट

ना समझ को समझ दो, वरदान नही

एक राजा वन भ्रमण के लिए गया। भ्रमण करता हुआ वन में काफी दूर निकल गया और रात अधिक होने पर घर जाने का रास्ता भी भूल गया उसकी भूख प्यास भी अधिक बढने लगी और वह भूख प्यास से व्याकुल हो उठा तभी उसे वन मे एक वनवासी की झोपडी दिखाई दी तो राजा उस वनवासी के यहां सुबह तक रूकने के लिए आग्रह करने लगा । उस वनवासी ने राजा का काफी सत्कार किया और उसके खाने–पीने तथा सोने के लिए आसन का भी इंतजाम किया। सुबह होने पर राजा ने उस वनवासी से कहा – हम इस राज्य के शासक है तुम्हारी सजन्नता से प्रभावित होकर हम तुम्हे अमुक नगर का चंदन बाग प्रदान करते हैं। उस चंदन बाग के द्वारा तुम्हारा सारा जीवन आनन्द से व्यतीत होगा ।

वनवासी उस परवाने को लेकर अधिकारी के पास गया और बहुमूल्य चंदन का उपवन उसे प्राप्त हो गया। चंदन का क्या महत्व है और चंदन का किस प्रकार लाभ उठाया जाता है वनवासी की जानकारी में नहीं था। वह वनवासी उस चंदन के बाग से चंदन के वृक्षों को काटकर उनका कोयला बनाकर शहर में बेचने लगा । इस प्रकार किसी तरह उसके गुजारे की व्यवस्था चलने लगी।

धीरे धीरे सभी वृक्ष समाप्त हो गये सिर्फ एक अंतिम पेड बचा वर्षा होने के कारण वह गीला हो गया जिसके कारण वह न तो जल सकता था और न ही उसका कोयला बन सकता था तब वनवासी ने लकडी को बेचने का निश्चय किया । जब वनवासी लकडी का गट्ठा लेकर बाजार में पहुंचा तो सुगन्ध से प्रभावित होकर लोगो ने उसका भारी मूल्या चुकाया । आश्चर्यचकित वनवासी ने जब लोगो से इसका कारण पूछा तो लोगो ने कहा – भाई यह चंदन काष्ठ है और यह बहुत ही मूल्यवान है। यदि तुम्हारे पास और भी ऐसी लकडियां हो तो उसका प्रचुर मूल्य प्राप्त कर सकते हो ।

तब वनवासी अपनी ना समझी पर पश्चाताप करने लगा कि उसने इतना बडा बहुमूल्य चंदन वन कौडी मोल कोयले बनाकर बेच दिया और रोने लगा। पछताते हुए नासमझ को सांत्वना देते हुए एक विचारशील व्यक्ति ने कहा – मित्र, पछताओं मत , यह सारी दुनिया तुम्हारी ही तरह नामसझ है। जीवन का एक– एक क्षण बहुमूल्य है पर लोग उसे तृष्णाओं के बदले कौडी मोल में गंवाते हैं। तुम्हारे पास जो एक वृक्ष बचा है उसी का सदुपयोग कर लो तो कम नहीं है। बहुत गंवाकर भी अंत में यदि कोई मनुष्य संभल जाता है तो वह भी बुद्धिमान ही माना जाता है।

दान की महिमा

नवीन जोशी
कार्यकारी सहायक (पी– I)

बहुत समय पहले एक राजा था। वह अपनी न्यायप्रियता के कारण प्रजा में बहुत लोकप्रिय था। एक बार वह अपने दरबार में बैठा ही था कि अचानक उसके दिमाग में एक सवाल उभरा। सवाल था कि मनुष्य का मरने के बाद क्या होता होगा? इस अज्ञात सवाल के उत्तर को पाने के लिए उस राजा ने अपने दरबार में सभी मंत्रियों आदि से मशवरा किया। सभी लोग राजा की इस जिज्ञासा भरी समस्या से चिंतित हो उठे। काफी देर सोचने विचारने के बाद राजा ने यह निर्णय लिया कि मेरे सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा दिया जाए कि जो आदमी कब्र में मुरदे के समान लेटकर रात भर कब्र में मरने के बाद होने वाली सभी क्रियाओं का हवाला देगा, उसे पांच सौ सोने की मोहरें भेंट दी जाएंगी। राजा के आदेशानुसार सारे राज्य में उक्त ढिंढोरा पिटवा दिया गया। अब समस्या आई कि अच्छा भला जीवित कौर व्यक्ति मरने को तैयार हो? आखिरकार सारे राज्य में एक ऐसा व्यक्ति इस काम को करने के लिए तैयार हो गया, जो इतना कंजूस था कि वह सुख से खाता पीता, सोता नहीं था। उसको राजा के पास पेश किया गया। राजा के आदेशानुसार उसके लिए बढ़िया फूलों से सुसज्जित अर्थी बनाई गई। उसको उस पर लिटाकर बाकायदा श्वेत कफन से ढक दिया गया और उसे कब्रिस्तान ले जाया गया। घर से जाने पर रास्ते में एक फकीर ने उसका पीछा किया और उससे कहा कि अब तो तुम मरने जा रहे हो, घर में तुम अकेले हो। इतना धन तुम्हारे घर में ही कैद पड़ा रहेगा, मुझे कुछ दे दो। कंजूस के बार बार मना करने पर भी फकीर ने कंजूस का पीछा नहीं छोड़ा और बार-बार कुछ मांगने की रट लगाए रहा। कंजूस जब एकदम परेशान हो गया तो उसने कब्रिस्तान में पड़े बादाम के छिलकों के एक ढेर में से मुट्ठी भर छिलके उठाए और उस फकीर को दे दिए। बाद में कंजूस को एक कब्र में लिटा दिया गया और ऊपर से पूरी कब्र बंद कर दी गई। बस एक छोटा से छेद सिर की तरफ इस आशा के साथ कर दिया गया कि यह इससे सांस लेता रहे और अगली सुबह राजा को मरने के बाद का पूरा हाल सुनाए। सभी लोग कंजूस को उस कब्र में लिटाकर चले गए। रात हुई। रात होने पर एक सांप कब्र पर आया और छेद देखकर उसमें घुसने का प्रयत्न करने लगा। यह देखकर कब्र में लेटे कंजूस की घबराहट का ठिकाना न रहा। सांप ने जैसे ही घुसने का प्रयत्न किया तो उस छेद में बादाम के छिलके आड़ बनकर आ गए। सुबह होते ही राजा के सभी नौकर बड़ी जिज्ञासा के साथ कब्रिस्तान आए और जल्दी ही कब्र को खोदकर कंजूस को निकाला। मरने के बाद क्या होता है, यह हाल सुनाने के लिए कंजूस को राजा के पास चलने को कहा। कंजूस ने राजा के नौकरों की बात को थोड़ा भी नहीं सूना। वह पहले अपने घर गया और अपनी तमाम धन संपत्ति को गरीबों में बांट दिया। सब लोग कंजूस की अचानक दान करने की इस दयालुता को देखकर हैरान में पड़ गए। उनके मन में कई सवाल उठने लगे। अंत में कंजूस को राज दरबार में पूरा हाल सुनाने के लिए राजा के सामने पेश किया गया। कंजूस ने बीती रात, सांप व बादाम के छिलकों के संघर्ष की पूरी कहानी कह सुनाई और कहा, "महाराज, मरने के बाद सबसे ज्यादा दान ही काम आता है, अतः दान करना ही सब धर्मों से श्रेष्ठ है। "

मैं कौन हूँ

दीपांकर कुमरा
कार्यकारी सहायक (परि.।।।)

मैं कौन हूँ, ये जानना उतना जरूरी नहीं है,
अपने घर से दूर हूँ, अभी के लिए मेरा घर सड़कें और ये जमीन है
कोई मुझे मजदूर कह कर पुकार रहा है तो कोई मजबूर
मीलों का सफर भूखे पेट, नंगे पैर चलकर तय कर रहा हूँ
फिर भी मंजिल अभी बहुत है दूर।
सफर समझ का जिसे शुरू किया था, जिंदगी का अंत बनता जा रहा है,
बच्चे ने तीन दिन से कुछ खाया नहीं है,
भूख भी एक दर्द ही तो है ये अब समझ आ रहा है।
साथ जो चले थे सफर में उनमें से कई तो अब मौत की गोद में है,
भूख और इस तपती धूप से मेरा हर एक साथी आज गहरी चोट में है
अब इसमें आश्चर्य कैसा, मैं भी इंसान हूं कोई और नहीं,
मजदूर हूँ हो सकता है मजबूर भी, पर कमजोर नहीं।

प्रदीप चितौड़
लेखापाल

मेट्रो की आवाज

जैसा कि विदित है कि कोविड-19 महामारी की रोकथाम के लिये भारत सरकार द्वारा कई महत्त्वपूर्ण कदम उठाये गये जिनमें से मेट्रो बंद होना एक है। कोविड-19 महामारी के चलते पांच महीने से ज्यादा वक्त तक बंद रही दिल्ली मेट्रो ने एक बार फिर तीन चरणों में अपनी सेवाएं बहाल कर दी हैं । गृह मंत्रालय ने हाल ही देश में चरणबद्ध तरीके से मेट्रो सेवाएं बहाल करने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए थे, जिसके बाद दिल्ली मेट्रो रेल निगम सेवाएं कुछ सीमित घंटों के लिए बहाल की गई हैं । दिल्ली मेट्रो आज दिल्लीवालों के लिए लाइफ लाइन बन गई है । जब भी मेट्रो का जिकर आता है तो मेट्रो में सुनाई देने वाली आवाजें जैसे घोषणायें, निवेदन इत्यादि जहन में आ जाती है जो कि अकसर हम सब मैट्रो में सफर करते समय सुनते थे । जिनको सुनने के बाद ही हम अपना मैट्रो का सफर शुरु किया करते हैं ।

आखिर वह आवाज किसकी है ? ज्यादातर लोगों का मानना है कि मेट्रो में होने वाली अनाउंसमेंट के पीछे कंप्यूटर वॉइस है । लेकिन इसके पीछे कोई कंप्यूटर वॉइस नहीं बल्कि दो बेहतरीन आवाजें हैं । जिसमें पुरुष की आवाज शम्मी नारंग की है और महिला की आवाज सुश्री रिनी सिमोन खन्ना की है । आईये इस दोनों के बारे में कुछ अहम बातें जानते हैं :

श्री शम्मी नारंग

दिल्ली मेट्रो में यात्रा के दौरान जिस पुरुष की आवाज आपको लगातार हिन्दी भाषा में सुनाई देती है, वो आवाज आईआईटी दिल्ली से पोस्ट ग्रेजुएशन कर चुके श्री शम्मी नारंग की है। बता दें, कि वह IIT दिल्ली से इंजीनियरिंग में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। जब वह 19 साल के थे तो उनकी आवाज एक विदेशी इंजीनियर ने सुनी जिसे सुनकर वह काफी प्रभावित हुए। जिसके बाद उन्होंने श्री शम्मी को **'Voice of America'** के हिन्दी विभाग में मौका दिया। इसके बाद वह दूरदर्शन से जुड़ गए और दूरदर्शन के जाने माने एंकर रहे श्री शम्मी नारंग की आवाज का प्रभाव इस बात से पता चलता है कि उन्हें दूरदर्शन ने 10,000 लोगों के बीच से चुना गया था।

सुश्री रिनी सिमोन खन्ना

सुश्री रिनी मेट्रो में अंग्रेजी में साफ उच्चारण के साथ सारे निर्देश देती हैं। इनके पिता भारतीय वायु सेना के एक अधिकारी थे। इसलिए रिनी को देश के 9 अलगअलग स्कूलों में पढ़ाई करनी - पड़ी। उन्होंने दूरदर्शन के साथ 1985-2001 में न्यूज रीडर की तरह काम किया था। उसके बाद उन्होंने कई जगह वॉइस ओवर आर्टिस्ट और कई इवेंट में एंकर की तरह काम किया।

ऐसे बनें मेट्रो की आवाज

सुश्री शम्मी नारंग ने बताया जब मेट्रो के ट्रायल शुरू करने के बाद डीएमआरसी की एक मीटिंग चल रही थी तो उस दौरान डीएमआरसी के पूर्व चैयरमेन श्रीधरन बैठे हुए थे और उन्होंने कहा कि एक लड़का है जो काफी अच्छा पढ़ता है उसकी आवाज काफी अच्छी है और लड़कियों में रिनी सिमोन खन्ना की आवाज बेहतरीन है। जिसके बाद मेट्रो के लिए इन दोनों की आवाजों का ट्रायल लिया गया। उन्होनें बताया कि मुझे और रिनी को ये भी नहीं मालूम था कि 'अगला स्टेशन' के बाद क्या बोलना है। लेकिन ट्रायल के बाद सभी ने हम दोनों की आवाज को खूब पसंद किया । नारंग ने बताया दिल्ली, गुड़गांव और नोएडा हम दोनों के हिस्से में आ गया था । जिसके बाद मेट्रो में हमारी आवाज में अनाउंसमेंट होने लगी । ये हमारे लिए गर्व की बात है । श्री शम्मी ने एक इंटरव्यू ने बताया कि ये कहना गलत नहीं होगा कि मेट्रो ने हमारी आवाज को अमर कर दिया है । जब तक मेट्रो रहेगी हमारी आवाज भी रहेगी ।

विजय इंग्ले
प्रोग्रामर

भगवान और भक्त

अकबर एक मुस्लिम शासक थे, परंतु वह समान रूप से सभी धर्मों को सम्मान करते थे और भगवान के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक रहते थे। एक दिन उन्होंने बीरबल से पूछा, "क्या यह सच है कि हिंदू पौराणिक कथाओं में देवताओं में से एक देवता ने हाथी को बचाया था, जिसने मदद के लिए उनसे प्रार्थना की थी?" बीरबल ने कहा, जी महाराज हाथियों का राजा गजेन्द्र जब एक मगरमच्छ द्वारा पकड़ लिया गया था, जो मारना मारना चाहता था, तब उसने भगवान विष्णु से प्रार्थना की। भगवान विष्णु ने प्रार्थना सुन ली और वे गजेन्द्र को बचाने के लिए आये थे।" अकबर ने कहा, "गजेन्द्र की रक्षा के लिए भगवान खुद क्यों आये। वह अपने सेवकों को भी भेज सकते थे। उनके पास तो कई सारे सेवक होंगे?" बीरबल ने कहा, "मैं कुछ ही दिनों में इस सवाल का जवाब दे दूंगा।"

राजकुमार अकसर अपने एक सेवक के साथ शाम को सैर के लिए जाते थे। बीरबल ने चतुराई से उस सेवक से दोस्ती कर ली और उसे किसी को भी बताने के लिए मना किया वे दोस्त थे। फिर वह मोम का एक पुतला लेकर आया, जो बिल्कुल राजकुमार की तरह दिखता था। एक शाम जब राजकुमार सो रहा था, तब बीरबल ने राजकुमार के बजाय सैर के लिए पुतले को ले जाने को सेवक से कहा। सेवक ने वैसा ही किया, जैसा बीरबल ने कहा था। थोड़ी देर बाद वह सेवक अकबर के पास दौड़ते हुए आया और बोला, ''जहांपनाह जल्दी जल्दी चलिए'', राजकुमार तालाब में गिर गए हैं। वह तैरना नहीं जानते हैं।"

अकबर ने यह सुना तो वह अपने सिंहासन से जोर से उछले और तालाब की ओर भागे। जब वह तालाब पर पहुंचे, तो राजकुमार को बचाने के लिए उसमें कूद गये। अकबर को बहुत राहत मिली, जब उन्हें तालाब में राजकुमार के बजाय राजकुमार की तरह दिखने वाला मोम का एक पुतला मिला। बीरबल बादशाह का पानी से बाहर आने के लिए इंतजार कर रहे थे।अकबर ने नाराज होकर बीरबल से पूछा, "यह किस तरह का मजाक है?" बीरबल ने कहा, "जहांपनाह तालाब में आप खुद क्यों कूदे। आप राजकुमार को बचाने के लिए सेवक को भी भेज सकते थे। आप के पास तो बहुत सारे सेवक हैं, क्या ऐसा नहीं है?" अकबर को वह सवाल याद आ गया, जो उसने बीरबल से भगवान के लिए पूछा था। बीरबल ने आगे कहा, "जिस तरह आप अपने पुत्र से प्रेम करते हैं, उसी तरह भगवान भी अपने भक्तों से प्रेम करते हैं। इस प्रेम के कारण ही वह खुद उनकी रक्षा करने आ जाते हैं। आपने उस दिन पूछा था कि गजेन्द्र को मगरमच्छ से बचाने के लिए भगवान विष्णु खुद क्यों आये थे। अब आपके पास जवाब है।"

अकबर ने कहा, "इससे बेहतर मुझे कोई और नहीं समझा सकता था। अब मैं समझ गया।"

रेखा जुयाल
कार्यकारी सहायक (विश्व बैंक)

आपका विचार आपके जीवन का आकार

आपका विचार आपके जीवन को आकार देता है। वे आपके कार्यों, निर्णयों, प्रतिक्रियाओं, रिश्तों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं। बदले में आपके विचार विभिन्न इच्छाओं, भावनाओं, विश्वासों और अनुभव द्वारा नियंत्रित होते हैं। आप पूरी तरह से अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए सकारात्मक सोच पर निर्भर नहीं हो सकते। आपको अपनी समस्याओं और स्थितियों से निपटने के लिए संतुलित और व्यावहारिक होने के लिए अपनी सोच और दृष्टिकोण में एक मौलिक बदलाव की आवश्यकता हो सकती है। समर्पण, कार्य के प्रति समर्पण और दृढ़ संकल्प के साथ सकारात्मक सोच हर सफल हस्ती की सफलता के महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। जीवन एक लड़ाई है, इसे निडर होकर लड़ना होगा। दृढ़ संकल्प और एकाग्र प्रयासों के साथ आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण, सही अभिरुचि के साथ लड़ें, सफलता की पक्की राह पर अग्रसर हो। कहा जाता है कि भाग्य बहादुर के पक्ष में है। भगवान भी उनकी मदद करते हैं जो खुद की मदद करते हैं। एक कायर, एक निराशावादी को भी दौड़ में लड़ने की हिम्मत नहीं करता है। यह एक आशावादी और दृढ़ आत्मा है, जो लड़ने की हिम्मत करता है। जब वल्लभभाई पटेल ने बताया कि 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' तो बहुत से लोगों को यह एक नारा लगता है, लेकिन सभी स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा लगाए गए निरंतर संघर्ष ने पटेल के दावे का समर्थन किया और हम स्वतंत्रता जीत सकते थे। सही समय पर, सही दिशा में, उचित समय पर प्रहार करते हुए, प्रयासों को व्यवस्थित करना, लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। आशावाद, दृढ़ संकल्प, अदम्य इच्छा शक्ति हर असंभव कार्य को संभव बनाती है।

अगर आपके जीवन में कुछ बुरा होता है, तो आप नकारात्मक विचारों से घिर जाते हैं। यह व्यक्तिगत या व्यावसायिक कारणों से हो सकता है। यह किसी तरह से आपके जीवन के कुछ हिस्सों को प्रभावित करता है। सकारात्मकता की शक्ति में विश्वास आपको तनाव से बचने में मदद कर सकता है। जो कुछ भी हुआ, उससे सीखना महत्वपूर्ण है। तनाव के रूप में आगे बढ़ने के लिए सफलता की कुंजी केवल आपकी प्रगति के रास्ते में बाधा बन जाएगी। सकारात्मकता की शक्ति आपको अपने कौशल की खोज करने में मदद करती है। आप सकारात्मक मानसिकता के साथ घंटों के अंधेरे में आशा की किरण पा सकते हैं। सफलता तक पहुँचने के लिए ये सभी आवश्यक हैं। आशावाद भी आनंद को पूरा करने में आपकी मदद करता है। यह आपके व्यक्तित्व को लोगों के लिए आकर्षक बनाता है। इस तरह से आप अन्य लोगों को उनकी सोच के तरीके को बदलने में मदद कर सकते हैं। इसके अलावा, आप उनसे बहुत कुछ सीख भी सकते हैं। सफलता पाने के लिए, आपके पास सकारात्मकता की योजना, दृढ़ संकल्प और शक्ति होनी चाहिए। सफलता की कल्पना करना भी सफलता की कुंजी है। इसके अलावा, यह आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित भी कर सकता है। इस प्रकार, आपको यह कल्पना करने की कोशिश करनी चाहिए कि आप जीवन में क्या हासिल करना चाहते हैं। आपको सफलता के लिए अपने रोड-मैप की कल्पना करनी चाहिए। आपको कठिनाइयों की कल्पना करनी चाहिए और सफलता की तलाश में आप को आसानी हो सकती है।

कविता क्या है

गोकुलानंद फुलारा
कार्यालय सहायक(वि.एवं.प्रशा)

प्रकृति बदलती क्षणदेखो क्षण-,
बदल रहे अणु, कणकण देखो-
तुम निष्क्रिय से पड़े हुए हो
भाग्य वाद पर अड़े हुए हो।

छोड़ो मित्र पुरानी डफली !,
जीवन में परिवर्तन लाओ
परंपरा से ऊंचे उठ कर,
कुछ तो स्टैंडर्ड बनाओ।

जब तक घर मे धन संपति हो,
बने रहो प्रिय आज्ञाकारी
पढ़ो, लिखो, शादी करवा लो,
फिर मानो यह बात हमारी।

माता पिता से काट कनेक्शन,
अपना दड़बा अलग बसाओ
कुछ तो स्टैंडर्ड बनाओ।

करो प्रार्थना, हे प्रभु हमको,
पैसे की है सख़्त ज़रूरत ।
अर्थ समस्या हल हो जाए,
शीघ्र निकालो ऐसी सूरत।
हिन्दी के हिमायती बन कर,
संस्थाओं से नेह जोड़िये
किंतु आपसी बातचीत में,
अंग्रेजी की टांग तोड़िये।
इसे प्रयोगवाद कहते हैं,
समझो गहराई में जाओ
कुछ तो स्टैंडर्ड बनाओ।

कवि बनने की इच्छा हो तो,
यह भी कला बहुत मामूली
नुस्खा बतलाता हूँ, लिख लो,
कविता क्या है, गाजर मूली।

भूपाल सिंह बिष्ट
कार्यकारी सहायक (वि.एवं प्रशा.)

एक राक्षस 'गयासुर' के कारण गया बना है मोक्ष स्थली

बिहार की राजधानी पटना से करीब 104 किलोमीटर की दूरी पर बसा है गया जिला। धार्मिक दृष्टि से गया न सिर्फ हिन्दूओं के लिए बल्कि बौद्ध धर्म मानने वालों के लिए भी आदरणीय है। बौद्ध धर्म के अनुयायी इसे महात्मा बुद्ध का ज्ञान क्षेत्र मानते हैं जबकि हिन्दू गया को मुक्तिक्षेत्र और मोक्ष प्राप्ति का स्थान मानते हैं।

इसलिए हर दिन देश के अलगअलग भागों से नहीं बल्कि विदेशों में भी बसने वाले- हिन्दू गया में आकर अपने परिवार के मृत व्यक्ति की आत्मा की शांति और मोक्ष की कामना से श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान करते दिख जाते हैं। लेकिन क्या आप जानते है की गया को मोक्ष स्थली का दर्ज़ा एक राक्षस गयासुर के कारण मिला है? आज हम आपको गयासुर से संबंधित वही पौराणिक वृतांत बता रहे हैं। पुराणों के अनुसार गया में एक राक्षस हुआ जिसका नाम था गयासुर। गयासुर को उसकी तपस्या के कारण वरदान मिला था कि जो भी उसे देखेगा या उसका स्पर्श करगे उसे यमलोक नहीं जाना पड़ेगा। ऐसा व्यक्ति सीधे विष्णुलोक जाएगा। इस वरदान के कारण यमलोक सूना होने लगा।

इससे परेशान होकर यमराज ने जब ब्रहमा, विष्णु और शिव से यह कहा कि गयासुर के कारण अब पापी व्यक्ति भी बैकुंठ जाने लगा है इसलिए कोई उपाय कीजिए। यमराज की स्थिति को समझते हुए ब्रहमा जी ने गयासुर से कहा कि तुम परम पवित्र हो इसलिए देवता चाहते हैं कि हम आपकी पीठ पर यज्ञ करें।

गयासुर इसके लिए तैयार हो गया। गयासुर के पीठ पर सभी देवता और गदा धारण कर विष्णु स्थित हो गए। गयासुर के शरीर को स्थिर करने के लिए इसकी पीठ पर एक बड़ा सा शिला भी रखा गया था। यह शिला आज प्रेत शिला कहलाता है। गयासुर के इस समर्पण से विष्णु भगवान ने वरदान दिया कि अब से यह स्थान जहां तुम्हारे शरीर पर यज्ञ हुआ है वह गया के नाम से जाना जाएगा। यहां पर पिंडदान और श्राद्ध करने वाले को पुण्य और पिंडदान प्राप्त करने वाले को मुक्ति मिल जाएगी। यहां आकर आत्मा को भटकना नहीं पड़ेगा।

रेनू शर्मा
कार्याकारी सहायक (वि एवं प्रशा.)

जीना सीखिए

दो तिनके नदी की धार में बहते जा रहे थे। एक मजे से खुशी–खुशी धार के साथ बह कर उछलता कूदता, गीत गाता हुआ जा रहा था। प्रभु का धन्यवाद कर रहा था। वहीं दूसरा तिनका परेशान, रोता, झींकता बह रहा था। वो भगवान को इस जीवन के लिए कोस रहा था। पर नदी की तेज धार के समक्ष किसकी चली जो इसकी चलती। नदी जाके अपनी मंजिल यानी सागर में जा कर समा गयी। साथ ही दोनों तिनके भी समुन्द्र में समा गये। एक तिनका हंसते, मुस्कुराते सफर तय करता है, वही दूसरा दुखी, परेशान, रोता, शिकायतें करते करते अपना सफर को तय करता है। लेकिन हैरानी की बात ये की दोनों की मंजिल एक ही थी। दोनों सागर की अथाह गहराइयों में समा गए।

ये दो तिनके प्रतीक है दो प्रकार के मनुष्यों के, यानी एक ऐसा जो हर हाल में खुश हैं। उसने सीख लिया है कि दुख हो तो भी, जिंदगी को हर हाल में जीना है तो हर पल एक उत्सव की तरह जिया जाये। क्योंकि दुखी होने से किसी समस्या का हल नहीं निकलता। बल्कि परेशानी में हमारा दिमाग भी काम करना बंद कर देता है। कुछ बातों पर हमारा बस नहीं चलता। किसी शायर ने कहा है कि, बात गर समझ न आ सके तो हाल पे वक्त को छोड़ दो, समझदारी भी इसी में है कि कभी– कभी नासमझ बनना भी एक समझदारी होती है। अगर मन का हो तो अच्छा, न हो तो और भी अच्छा । क्योंकि उसमें ऊपर वाले की इच्छा शामिल होती है।

दूसरे प्रकार के मनुष्य वो है, जिन्हें हर हाल में दुखी रहना है । वो दुखी होने के बहाने ढूंढते है। जरा सी समस्या आते ही उनका कुढना व परेशान होना जन्मसिद्ध अधिकार होता है।

घर में मेहमान आ गये तो उनकी बडबडाहट शुरू हो जाती है। उनकी सेवा भी करेंगें, उनके आगे नकली चेहरे से हंसी भी दिखायेगें। पर अंदर ही अंदर कोस रहे होते है। यहीं काम हंसी खुशी हुए बिना परेशान हो सकता था। फर्क सोच का है। इस प्रकार के लोग हर जगह नकारात्मक चीजें ही ढूढते है। इन्हें हर चीज से शिकायत होती है। हर वक्त भगवान को ताने देते रहेंगें कि हे भगवान तूने ये नहीं दिया, तूने क्यों कर दिया आदि आदि। क्या हम सुबह उठकर ईश्वर का धन्यवाद करते हैं कि हे प्रभु तूने हमें हवा, पानी और इस शरीर को दिया है। एक वेंटीलेटर पर लेटे व्यक्ति से पूछिये की ऑक्सीजन की कीमत क्या है। डायलिसिस पर पडें इंसान से पुछिये की किडनी कितनी कीमती है। पर हम उसकी कदर नहीं करते, क्योंकि हमें बिना किसी मूल्य के मिली है । हमारे पास जो भी है उसका धन्यवाद करना सीखिये, फिर देखे जिंदगी कैसे बदल जाती है। शिकायत करना छोंड कर जो है उसका धन्यवाद कीजिए । वरना किसी दिन जो है वो भी नहीं रहेगा । रात के बाद दिन व दिन के बाद रात तो आनी ही है सुख है तो दुख भी है। अगर दुख है तो उम्मीद रखियेगा की सुख का आगमन होने वाला है ।

क्योंकि सुख और दुख एक ही सिक्के के दो पहलू है, अगर जीवन में दुख ना हो तो हमें कभी सुख की अनुभूति भी नहीं हो सकती। जैसे केवल एक प्यासा ही शीतल जल की कीमत को समझ सकता है, एक भूखा ही रोटी की कीमत को जानता है। अगर आपका पेट भरा है तो 56 भोग भी आपको आन्नद नहीं दे सकता। यह जरूरी है कि यदि आप सुख की तृप्ति को प्राप्त करना चाहते हैं तो दुखों को भी हंसी खुशी स्वीकारना सीखिए।

दान भावना

गुलशन
निजी सहायक (वि. एव प्रशा.)

श्रीनिवास नाम का एक बालक अपनी दादी के साथ एक नए गॉव में रहने आया। वे दोनो गॉव के साहूकार के पास पहुंचे। साहूकार अपनी तोंद फुलाए कुरसी पर बैठा था। दादी और पोते ने साहूकार को प्रणाम किया।

दादी ने उससे कहा, "मालिक हम दुसरे गॉव से आए हैं। अब यही रहना चाहते हैं। आप हमे सिर छिपाने की जगह दे दे। बदले में हम आपके घर के काम कर देंगे।"

साहूकार ने मन में सोचा–'बिना दाम के दो मजदूर मिल रहे हैं। इन्हे क्यो छोडा जाए?' वह मान गया। उसने घर के पिछवाडे उन्हे रहने की जगह दे दी।

दादी ने पूछा, "साहूकार जी! इसका किराया क्या लगेगा?"

साहूकार ने झट से बताया, "मेरे घर में चार भैसे, तीन बैल और चार गाये हैं। उन सबको चराना होगा। उनके गोबर को पाथकर उपले बनाने होंगे और उपले बेचकर उनके पैसे मुझे देने होंगे। वही उसका किराया होगा।"

दादी और पोते ने साहूकार की शर्त मान ली।

उसी दिन से दादी तो साहूकार के घर का काम करने लगी और पोते ने गॉव में ही कोई काम ढूंढ लिया। उनका जीवन चलने लगा।

एक दिन की बात हैं। साहूकार के दरवाजे पर फटेहाल एक भिखारी आ गया। साहूकार ऊंची आवाज में बोला, "चलो-चलो, आगे बढो! मेरे पास कुछ नहीं हैं।

वह भिखारी घूमकर पिछवाडे की ओर आ गया। दादी को उसपर दया आ गई। घर में जो खाना बना हुआ रखा था, वह उसने भिखारी को दे दिया।

विदा होने से पहले भिखारी दादी की हथेली पर एक दमडी रखते हुए बोला, "मॉ, तुम इससे अपने पोते के लिए मुरमुरे खरीद लेना।"

दादी ने उस दमडी को अपनी संदूकची में रख दिया। वह सोच में थी कि आज अपने पोते को क्या खिलाएगी! तभी उसका पोता खेत से आया। वह भूखा था। दादी ने पोते को सारी बात बताई और कहा, "संदूकची में से दमडी लेकर कुछ खरीद ला।"

जैसे ही पोते ने संदूकची खोली, सोने की चमक से सारी झोपडी जगमगा उठी।

उन्होने सोना बेचकर सुंदर मकान बनाया, जमीन खरीदी, बैल खरीदे और बडे किसान बन गए।

उनकी समृद्धि देखकर सेठ ने सोचा, 'काश, मैंने उस भिखारी को न भगाया होता।'

एक दिन वही भिखारी फिर उसके द्वार पर आया जिसे बहुत समय पहले उसने भगा दिया था। साहूकार दौडकर बाहर आया। भिखारी को सम्मान के साथ अंदर ले गया। इसके बाद थाली में छप्पन व्यंजन सजाकर उसके सामने ले आया। मुसुकराते हुए भिखारी ने छककर भोजन किया। जाते हुए वह साहूकार को भी एक दमडी दे गया।

दमडी हाथ मे आते ही साहूकार की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने दमडी को बडे जतन से अपनी तिजोरी में रखकर ताला लगा दिया।

उस रात उसे नींद नही आई। वह बार बार तिजोरी के पास आता और फिर बिस्तर पर लेट जाता। इस तरह पूरी रात घूमते हुए बीती। पौ फटते ही साहूकार तिजोरी खोलने आया। सोना मिलने की खुशी में उसने अपनी ऑखे बंद कर ली थी। वह सोच रहा था कि उसकी पूरी तिजोरी जगमग कर रही होगी। लेकिन यह क्या! हुआ तो बिलकुल उलटा। उसकी तिजोरी में रखा हुआ धन कोयला बन चुका था। साहुकार समझ गया कि यह सब करनी का फल है। दादी ने निस्स्वार्थ भाव से भिखारी को भोजन कराया था, इसलिए उन्हे वैसा ही फल मिला। उसने लालच में आकर भिखारी को भोजन दिया था सो ऐसा फल मिला। इसके बाद से साहूकार का व्यवहार हमेशा के लिए बदल गया। दादी और पोते ने उसे अच्छा सबक सिखा दिया।

यतिन्द्र कुमार वत्स
परामर्शदाता

गुरू की इच्छा प्रभु की इच्छा

प्राचीन समय में गुरु अपने शिष्यों को विद्या के ज्ञान के साथ–साथ अच्छे सदगुणों जैसे अनुशासन, धर्म, शिष्टाचार आदि ज्ञान प्रदान करने पर जोर देते थे। उनका यह मानना था कि शिष्यों में विद्या के साथ चरित्र का होना भी जरूरी है। इसलिए वह उनकी समय–समय पर परीक्षा भी लेते रहते थे।

एक बार आश्रम में बहुत तेज बारिश हो रही थी तथा पास के खेत की मेंढ़ टूट जाने के कारण आश्रम में बारिश का पानी जमा हो गया। गुरू ने यह देख अपने एक शिष्य को कहा कि तुम वहां जाकर उस खेत की मेंढ़ ठीक कर आओ। ताकि आश्रम में जमा पानी कम हो जाएगा। शिष्य गुरू की आज्ञा का पालन कर खेत की ओर चला गया। खेत में जाकर जब वह मेंढ़ को ठीक करता हुआ थक गया तो वह मेंढ़ बार–बार टूट जाती। परन्तु उसे कोई उपाय नहीं सूझा तो वह स्वयं ही मेंढ़ पर लेट गया। इस प्रकार पानी को रोकने में वह सफल हुआ।

बहुत रात बीत जाने पर जब छात्र नहीं लौटा तो गुरू स्वयं खेत की ओर निकल गए। शिष्य को मेंढ़ पर लेटा देखा तो गुरू की छाती भर आई और उन्होनें उसे गले से लगा लिया।

यह बात फिर गुरूजी ने अपने बाकी शिष्यों को भी बताई और कहा कि सभी शिष्यों को विद्या ज्ञान के साथ–साथ सद्गुणों में भी श्रेष्ठ होना चाहिए।

लक्ष्मीकान्ता
निजी सहायक (पी–।।)

समाचार पत्र

समाचार पत्र हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गए है। यह देश विदेश की सभी सूचनाओं को एक ही स्थान पर उपलब्ध करवाते है। समाचार पत्रों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, बाजार, स्वास्थ्य इत्यादि पर लेख प्रकाशित होते हैं। यह सभी के लिए फायदेमंद है इसलिए सभी वर्ग के लोगों को समाचार पत्र पढ़ना चाहिए।

समाचार पत्र का इतिहास -

आज से 3 शताब्दी पहले तक समाचार पत्र का नाम तक नहीं था। उस समय लोग एक दूसरे तक सूचना पहुंचाने के लिए संदेश वाहक, कबूतर के माध्यम से संदेश पहुंचाते थेलेकिन . सूचना पहुंचने में कईदिनों या फिर कभी कभी तो महीनों का समय लग जाता था। तब तक तो नई सूचना आ जाती थी।

शीघ्र सूचना की प्राप्ति के समाचार पत्र का उद्‌गम हुआ। समाचार पत्र का जन्म 16 वी शताब्दी में इटली के वेनिस नगर में हुआ इसके बाद इसका विस्तार उत्तरोत्तर बढ़ता गया । धीरे-धीरे लोगों ने इसकी उपयोगिता को मानना शुरू कर दिया और अन्य देशों में भी इसका विस्तार होने लगा।

17 वी शताब्दी के प्रारंभ में इंग्लैंड में भी इसका उपयोग होने लगा। इसके बाद तो जैसे समाचार पत्रों को पंख लग गए। प्रत्येक देश के नागरिकों को समाचार पत्र पढ़ना अच्छा लगने लगा। फिर तो इसकी ख्याति फैल गई। भारत देश एक गरीब और गुलाम देश था इसलिए यहां पर समाचार पत्र आने में वक्त लगा लेकिन 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्‌वारा भारतवर्ष में भी इसका पर्दापर्ण कर दिया गया क्योंकि भारत जैसे देश में सूचनाएं पहुंचाने के लिए अंग्रेजों के पास कोई साधन नहीं था।

भारत में समाचार पत्र की ख्याति को देखते हुए ईसाई पादरियों ने “समाचार दर्पण” नामक पत्र निकाला । इसके साथ ही ब्रहम समाज के संस्थापक राज राममोहन राज्य ने की "कौमूदी" नाम समाचार पत्र का सफल संपादन किया था।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने "प्रभात" नामक समाचार पत्र का संपादन किया उस समय यह समाचार पत्र बहुत लोकप्रिय हुआ था। धीरे-धीरे समाचार पत्र का विस्तार हुआ और इसका सभी क्षेत्रीय भाषाओं में संपादन होने लगा।

समाचार पत्र सूचना क्रांति का एक प्रमुख अंग है-

वर्तमान में लोगों के सुबह की शुरुआत अखबार पढ़ते हुए होती। हमारे देश में समाचार पत्र कई भाषाओं जैसे- हिन्दी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध है।

समाचार पत्र सूचनाओं का भंडार होता है इसमें हमें देश विदेश, व्यापार, राजनीति, अर्थव्यवस्था, समाज, रोजगार शेयर मार्केट, फसलों के भाव, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, विज्ञान, अंतरिक्ष, फिल्म उद्योग, भोजन और देशविदेश में घटने वाली छोटी से छोटी घटना का विवरण- होता है।

समाचार पत्र प्रतिदिन सूचना पाने का सस्ता और सुलभ स्त्रोत है। इसकी पहुंच शहरों से लेकर गांव तक है। प्रत्येक व्यक्ति को अखबार पढ़ना अच्छा लगता है क्योंकि इसमें सभी की रूचि के हिसाब से खबरें और मनोंरजन सामग्री भी उपलब्ध होती है। समाचार पत्र में विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक सूचनाएं भी उपलब्ध है। प्रत्येक समाचार पत्र की कीमत उनकी प्रतिष्ठा और लोकप्रियता के हिसाब से अलगअलग- होती है । समाचार पत्र प्रतिदिन, साप्ताहिक, मासिक रूप से छपते हैं। इनका उद्देश्य लोगों तक हर प्रकार की सूचना प्रतिदिन पहुंचाना होता है।

समाचार पत्रों का महत्व -

समाचार पत्र की महत्वता का पता इसी से लगाया जा सकता है कि इसे प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति पढ़ना पसंद करता है और सभी इसको खरीदने की क्षमता भी रखते है इसलिए समाचार पत्र सूचना पहुंचाने का सबसे सस्ता और सुलभ साधन है।

समाचार पत्र का महत्व दिनही जा रहा है और इनको पढ़ने वालों की प्रतिदिन बढ़ता- संख्या में भी बढ़ती हो रही है क्योंकि इसको बच्चों से लेकर बूढ़े तक सभी पढ़ना पसंद करते है, सभी के लिए इसमें कुछ ना कुछ सूचनाएं दी हुई होती है।व्यापारी वर्ग के लोग इसे इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि उन्हें प्रतिदिन के बाजार भाव पता लग जाते हैं और देश दुनिया में बाजार की स्थिति कैसी है यह भी पता लगता है साथ ही व्यापारी लोग अपनी व्यावसायिक उन्नति के लिए अखबार में विज्ञापन प्रकाशित करवा सकते है इससे उनको बहुत लाभ प्राप्त होता है। विद्यार्थियों के लिए समाचार पत्र बहुत ही महत्व की वस्तु है क्योंकि इसमें विज्ञान, राजनीति, शिक्षा और विभिन्न

योजनाओं की जानकारी संबंधी बातें छपी हुई होती है। रोजगार ढूंढ रहे युवाओं के लिए अखबार बहुत महत्व की चीज है क्योंकि देशविदेश में जितनी भी कंपनियां हैं वे सभी भर्ती के लिए अखबारों में सूचना देती है जो कि युवाओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सूचना होती है। समाचार पत्र देश दुनिया की खबर देने के साथ सत्य और असत्य में फर्क भी बताते है, वे राजनीति में चल रही घटनाओं का विश्लेषण करके प्रकाशित करते हैं। यह सरकार की आवाज जनता तक और जनता की आवाज सरकार तक पहंचाने का सबसे अच्छा साधन है।

प्राची गुसांई
कार्यकारी सहायक (पी–।।।)

बेटी बेटों से कम नहीं

एक गांव में रामसिंह और पदमा पति पत्नी रहते थे। कुछ समय बाद उनका बच्चा होने वाला था। पदमा हॉस्पिटल में भर्ती थी। नर्स ने रामसिंह को आकर खुशखबरी दी की आपके जुड़वाँ बच्चे हुए है।

रामसिंह ने कहा की दो - दो लड़के लेकिन नर्स ने कहा की एक लड़का एक लड़की। रामसिंह लड़की नहीं चाहता था क्योंकि लड़की की शादी में होने वाले खर्चे से वह डरता था। 2 -4 दिन के बाद रामसिंह अपनी पत्नी और बच्चो के साथ अपने घर पर आ गया। वह ज्यादातर लड़के को ही खिलाता था। पदमा को यह बाद पसंद नहीं थी। एक दिन रामसिंह अपनी पत्नी से बोला की हम दो-दो बच्चो सकते। हमारी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। का खर्च नहीं उठा इसके अलावा लड़की की शादी में होने वाले खर्चे को भी हम नहीं उठा सकते। इसलिए हम लड़की को मेरे मित्र को सौंप देते है। जिसकी कोई संतान नहीं है। वह हमारी लड़की को हम से भी अच्छे से पालेगा क्योंकि वह बहुत अमीर है।

पदमा ने अपनी लड़की को देने से मना किया लेकिन रामसिंह के कहने पर दुखी मन से उसने अपनी लड़की को रामसिंह को सौंप दिया। रामसिंह ने लड़की को अपने मित्र की बीवी को सौंप दिया। बच्चा पाकर वह बहुत खुश हुए। इसके बाद समय बीतता गया रामसिंह अपने लड़के को अच्छे से पाल रहा था और उसकी हर इच्छा को पूरा करता था। लड़का जब 20 वर्ष का हुआ तो उसने रामसिंह से बाइक दिलाने की जिद्द की। रामसिंह ने अपनी बीवी के गहने बेचकर उसको बाइक दिला दी। कुछ समय बाद उसने अपने लड़के के लिए खेत बेचकर एक दूकान खुलवा दी। जिससे वह कुछ कमाने लग गया। फिर कुछ समय बाद उसकी शादी भी करा दी। शादी के बाद रामसिंह के लड़के का व्यवहार बदल गया। वह अपने पिता से बोला आप मेरे ससुराल वालों को ताना मत मारा करो। रोज़ रोज़ वह किसी बात पर अपने माँ बाप से झगड़ा करता था। एक दिन उसने रामसिंह और पदमा दोनों को उन्ही के घर से निकाल दिया। बहुत समझाने पर भी वह नहीं माना। रामसिंह और उसकी पत्नी एक मंदिर में गए। वहाँ पहुंच कर पदमा ने रामसिंह को कहा की मंदिर का प्रसाद खा लेते है। जब वह प्रसाद ले रहे थे तो वहाँ पर रामसिंह के मित्र की पत्नी आ गयी। उसने रामसिंह को पहचान लिया। उसने अपनी उसी बेटी से रामसिंह को मिलवाते हुए बताया की यह वही है जिसको आपने 25 वर्ष पहले हमको सौंपा था। आज यह एक डॉक्टर है और वृद्धाश्रम भी चलाती है। रामसिंह और पदमा अपनी बेटी से मिलकर बहुत खुश हुए और उन्होंने अपनी सारी बात अपनी बेटी को बताई। इसके बाद वह बोली की अब आप दोनों मेरे साथ ही रहेंगे।

मोहम्मद जावेद
निजी सहायक (पी– I)

भारत में लोकतंत्र

प्रस्तावना

1947 में ब्रिटिश शासन के चंगुल से मुक्त होने के बाद भारत में लोकतंत्र का गठन किया गया था। इससे दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का जन्म हुआ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रभावी नेतृत्व के कारण ही भारत के लोगों को वोट देने और उनकी सरकार का चुनाव करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

भारत के लोकतांत्रिक सिद्धांत इस प्रकार हैं:

संप्रभु

संप्रभु का मतलब है स्वतंत्र किसी भी विदेशी शक्ति के हस्तक्षेप या नियंत्रण से मुक्त। देश को - चलाने वाली एक निर्वाचित सरकार है। भारतीय नागरिकों की संसद सरकार नागरिकों द्वारा, स्थानीय निकायों और राज्य विधानमंडल के लिए किए गए चुनावों द्वारा अपने नेताओं का चुनाव करने की शक्ति है।

समाजवादी

समाजवादी का अर्थ है देश के सभी नागरिकों के लिए सामाजिक और आर्थिक समानता। लोकतांत्रिक समाजवाद का अर्थ है विकासवादी, लोकतांत्रिक और अहिंसक साधनों के माध्यम से समाजवादी लक्ष्यों को प्राप्त करना। धन की एकाग्रता कम करने तथा आर्थिक असमानता को कम करने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

धर्म निरपेक्षता

इसका अर्थ है कि धर्म का चयन करने का अधिकार और स्वतंत्रता। भारत में किसी को भी किसी भी धर्म का अभ्यास करने या उन सभी को अस्वीकार करने का अधिकार है। भारत सरकार सभी धर्मों का सम्मान करती है और उनके पास कोई आधिकारिक राज्य धर्म नहीं है। भारत का लोकतंत्र किसी भी धर्म को अपमान या बढ़ावा नहीं देता है।

लोकतांत्रिक

इसका मतलब है कि देश की सरकार अपने नागरिकों द्वारा लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित हुई है। देश के लोगों को सभी स्तरों पर संघ, राज्य और स्थानीय पर अपनी सरकार का चुनाव करने का अधिकार है । लोगों के वयस्क मताधिकार को 'एक आदमी एक वोट' के रूप में जाना जाता है। मतदान का अधिकार किसी भी भेदभाव के बिना रंग, जाति, पंथ, धर्म, लिंग या शिक्षा के आधार पर दिया जाता है। न सिर्फ राजनीतिक बल्कि भारत के लोग सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र का भी आनंद लेते हैं।

गणतंत्र

राज्य का मुखिया आनुवंशिकता राजा या रानी नहीं बल्कि एक निर्वाचित व्यक्ति है। राज्य के औपचारिक प्रमुख अर्थात् भारत के राष्ट्रपति, पांच साल की अवधि के लिए चुनावी प्रक्रिया द्वारा चुने (लोकसभा तथा राज्यसभा) जाते हैं जबकि कार्यकारी शक्तियां प्रधान मंत्री में निहित होती हैं।

भारतीय लोकतंत्र द्वारा सामना किए जाने वाले चुनौतियां

संविधान एक लोकतांत्रिक राज्य का वादा करता है और भारत के लोगों को सभी प्रकार के अधिकार के प्रदान करता हैं। कई कारक हैं जो भारतीय लोकतंत्र को प्रभावित करने का कार्य करते हैं तथा इसके लिए एक चुनौती बन गए है।

निष्कर्ष

भारत के लोकतंत्र की दुनिया भर में काफी प्रशंसा की जाती है। देश के हर नागरिक को वोट देने का अधिकार उनके जाति, रंग, पंथ, धर्म, लिंग या शिक्षा के आधार पर किसी भी भेदभाव के बिना दिया गया है। देश के विशाल सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई विविधता लोकतंत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है। इसके साथ ही आज के समय में लोगों के बीच का यह मतभेद एक गंभीर चिंता का कारण बन गया है। भारत में लोकतंत्र के सुचारु कार्य को सुनिश्चित करने के लिए हमें इन विभाजनकारी प्रवृत्तियों को रोकने की आवश्यकता है।

रोहित कुमार
निजी सहायक (तकनीकी)

भारत में हिंदी की उपयोगिता

वर्तमान भारत को संपूर्ण डिजिटल भारत मे बदलने के लिए 01 जुलाई 2015 को भारत सरकार के द्वारा डिजिटल भारत अभियान जिसे हम संक्षिप्त में डिजिटल भारत भी कहते हैं, इसकी शुरूआत की गई। भारतीय विभागों तथा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनी के द्वारा सशक्त डिजिटल भारत बनाने की दिशा में यह एक योजनागत और महत्वपूर्ण पहल है। डिजिटल भारत के तीन प्रमुख घटक इस प्रकार हैं : क) डिजिटल आधारभूत ढांचों का निर्माण करना, ख) इलैक्ट्रानिक माध्यम से सुविधाओं को लोगों तक पहुँचाना और ग) डिजिटल साक्षरता (साक्षरता जिसमें हिंदी संवाद के जरिए सुविधाओं का लाभ उठाना)। डिजिटल आधारभूत ढाचों के निर्माण के अंतर्गत उन ढांचों का निर्माण करना है जिसके द्वारा यह सुविधा (डिजिटल) भौतिक रूप से लोगों तक पहुंच सके। इलैक्ट्रानिक माध्यम से सुविधाओं को लोगों तक पहुँचाने के लिए लोगों तक विभिन्न प्रकार की जानकारियों को पहुंचाना इस घटक का महत्व है। डिजिटल साक्षरता के अंतर्गत साक्षरता के जरिए लोगों को खासकर हिंदी के माध्यम से जानकारी पहुंचानी है और वे लोग जो इससे अनजान है तथा असक्षम है उन्हें इस लायक बनाना है ताकि लोग इन सुविधाओं का लाभ उठा सकें। भारत की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा उसका है जो ढंग से अंग्रेजी का प्रयोग नही कर सकते और इस तरह की सुविधाएं उनकी पहुंच से बाहर दिखती है। हम यह जानते हैं कि हिंदी भाषा ही वह माध्यम है जिससे हर तरह के लोग आपस में मिलजुल कर सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। हिंदी सरल भाषा है और यही वह माध्यम है जिससे इन सुविधाओं को आसानी से समझा जा सकता है। गांवों में किसान स्तर के लोगों से लेकर शहर में पढ़े–लिखे लोग भी हिंदी का माध्यम अपनाकर इन सुविधाओं का लाभ उठा सकते है। जिन लोगों को अंग्रेजी समझने में मुश्किल है उन लोगों को (जिनकी संख्या बहुत अधिक है) हिंदी की उपयोगिता इनके लिए संजीवनी का काम कर सकती है। इन सुविधाओं को जन–जन तक पहुंचाना सरकार के लिए बहुत बड़ी समस्या थी जिसे सरकार के डिजिटल भारत अभियान ने सुगम बना दिया है। हिंदी की उपयोगिता ने कई साइटस को सरल तथा आसानी से समझने वाला बना दिया है। सरकार ने जिस उद्देश्य से डिजिटली करण का अभियान चलाया है वह हिंदी के उपयोग से पूरा हो पाएगा और कागज के बिना या कम कागज के लागत पर पूर्ण रूप से सशक्त भारत का निर्माण कर पाएगा। हिंदी के लगातार उपयोग से इन सुविधाओं का आम जन लाभ उठा पाएंगे और भरपूर खुशहाली के रास्ते पर चल सकेंगे जो कि भारत सरकार का अभियान भी है और उद्देश्य भी। सरकार की तरफ से डिजिटल सुविधाओं को जन–जन तक पहुंचाना है। इस क्रम में सरकार ने बहुत सारे पोर्टल आरंभ किए है जिनको हिंदी में भी प्रस्तुत किया गया है। इनमें प्रमुख है :

1. **भीम ऐप**
2. **गैस बुकिंग का ऐप**
3. **हज ऐप**
4. **पर्यटन मंत्रालय का ऐप**
5. **कृषि बाजार का ऐप,**

आदि इन सबमें जो बहुप्रचलित ऐप सरकार ने किसानों के लिए लागू किया है उस वेबसाइट का नाम है ***mkisan.gov.in*** कोई भी किसान जिसकी पहुंच में कंप्यूटर और ब्राडबेंड सर्विस हो आसानी से कृषि संबंधित जानकारियों को हासिल कर सकता है। इन साइटस पर कृषि, बागवानी, पशुपालन जैसी जानकारियां उपलब्ध है। ठीक उसी तरह, भीप ऐप भी हिंदी में उपलब्ध है जिसे इस्तेमाल कर बैकिंग संबंधित सुविधाओं का लाभ लिया जा सकता है। हिंदी का इस्तेमाल कर यह सुविधाएं इतनी सरल हो गई है कि हर जन इन लाभों को लेने में लगा है। हिंदी की उपयोगिता ने इन सरकारी सुविधाओं से लोगों के जीवन में सरलता प्रदान की है। अतः हम यह कह सकते है कि हिंदी की उपयोगिता ने इन पोर्टलस को और अच्छा बना दिया है। अब इंटरनेट की सुविधा लगभग हर जगह विस्तारित हो रही है और आगे दो–चार सालों में गांवों में पूर्ण इंटरनेट की आपूर्ति होगी। यह वह समय होगा जब लोग इन सुविधाओं से परिचित होगें तब गांव और हर स्तर के लोगों के लिए जानकारी लेना और सुविधा का लाभ उठाना सरल हो जाएगा। सरकार के इन सुविधाओं का पूर्ण रूप से उपयोग अगर संभव है तो बस हिंदी के उपयोग से ही। सरकार ने इस दिशा में अच्छे कदम उठाते हुए सभी तरह के पोर्टल को हिंदी और अंग्रेजी में प्रस्तुत किया है। इसके लिए सरकार ने कई तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी किया है जिससे हिंदी में काम करने के अलावा अलग–अलग जानकारियां मिल सके। अलग–अलग सुविधाओं को एक लिंक से जोड़ने का प्रस्ताव है ताकि अलग–अलग घटक के कार्य को एक ही पोर्टल पर पूरा किया जा सके। उपरोक्त पहलुओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत सरकार ने जिस उद्देश्य से डिजिटल भारत की शुरुआत की है, उसमें हिंदी महत्वपूर्ण रोल अदा कर सकती है और कर रही है। अब देखना यह है कि आम लोग किस तरह सरकारी सुविधाओं को समझ कर उन्हें लागू कर और हिंदी जैसे माध्यम से डिजिटल भारत अभियान को सफल बनाते हैं। सरकार का उद्देश्य लोगों तक पहुंच कर उन्हें सरकारी सुविधाएं मुहैया कराना है, जिससे हर स्तर के लोग इसको समझ सके, उसका फायदा उठा सकें और अपनी जिंदगी को खुशहाल बना सकें। **इस नारे के साथ कि 'डिजिटल भारत है उद्देश्य – ई–गवर्नेंस से बढ़ेगा देश।'**

डिजिटल भारत का आरंभ 01 जुलाई 2015 को इंदिरा गांधी इन्डोर स्टेडियम में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा किया गया था तथा उन्होंने इसको सफल बनाने के लिए 01 लाख करोड़ रूपये भी अनुमोदित किये। भारत सरकार का लक्ष्य है कि सन् 2019 तक भारत को डिजिटल बनाया जाये। भारत को डिजिटल बनाने का सरकार का एक उद्देश्य यह है कि छोटे–छोटे गांवों, कस्बों इत्यादि में रहने वाले लोगों को इंटरनेट, मोबाइल, समाचार इत्यादि के माध्यम से सभी के साथ जोड़ा जा सके एवं वहां का

तकनीकीकरण हो सके। जैसाकि हम देखते है कि बहुत सी चीजें ऐसी हैं कि शहरों तक ही सीमित रह जाती हैं उनकों पूर्ण रूप से गांवों एवं कस्बों में नही पहुंचाया जाता है क्योंकि वहां पर इंटरनेट, वाईफाई इत्यादि की सुविधाएं नाममात्र है जिससे कि वे हिंदी को बढ़ावा नहीं दे पाते हैं या वे कुछ हिंदी भाषा के प्रति नया करना चाहते है तो उसको आगे तक नहीं पहुंचा पाते हैं। लेकिन जैसे–जैसे डिजिटल भारत का प्रोजेक्ट कार्य शुरू हुआ है वैसे–वैसे काफी बदलाव देखने को मिलते हैं। आजकल हम देखते हैं कि छोटे से छोटे गॉव में भी इंटरनेट जैसी सुविधा है जिसके द्वारा गांव में रहने वाला व्यक्ति हिंदी में लिखकर भी हिंदी भाषा व अन्य प्रकार की जानकारी ले सकता है। गद्य, पद्य व साहित्य से घिरी हुई हिंदी से आजकल भारत का नवयुग अपने आप को 'कूल' महसूस कर रहा है। यदि पहले किसी को हिंदी में कुछ लिखना होता था एवं कही पर कोई पत्र इत्यादि देना होता था तो कंप्यूटर द्वारा लिखना बहुत कठिन होता था जिसके कारण हिंदी की उपयोगिता कम महसूस होती थी। परंतु डिजिटल भारत की मुहिम के तहत ऐसे–ऐसे सॉफ्टवेयर बन गए हैं कि हम बहुत आसानीपूर्वक कंप्यूटर पर टाईप करके एवं बोलकर भी अपनी बात लिख सकते है। इन कारणों से आजकल सभी विभागों, संस्थानों एवं स्कूलों में भी हिंदी को बहुत महत्व दिया जाने लगा है।

भारत में गूगल के मुखिया का कहना है कि अगले कुछ वर्षों में ही 30 करोड़ से ज्यादा लोग हिंदी के माध्यम से इंटरनेट आदि से जुडेंगे तथा उसके बाद हिंदी ऐसी भाषा होगी जो कि अंग्रेजी को बहुत पीछे छोड़ चुकी होगी। जैसाकि हम सब जानते है कि हिंदी भाषा एक ऐसी भाषा है जो आजकल विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में नंबर 1 पर हैं तथा भारत में ही 70–80 प्रतिशत ऐसे लोग हैं जो हिंदी भाषा को सही प्रकार से बोल व लिख सकते हैं एवं समझ सकते हैं। विश्व में 176 ऐसे देश है जहां पर शिक्षण संस्थानों में हिंदी भाषा पढ़ाई जाती है। यह एक ऐसी भाषा है जिसमें शब्दों की भरमार है एवं इसके शब्द बहुत सरल एवं सुगम हैं।

भारत में डिजिटलीकरण के बाद से सभी सरकारी दफ्तरों में हिंदी की उपयोगिता बढ़ी है एवं लोगों में हिंदी में काम करने के प्रति एक रूचि जागी है क्योंकि अब कंप्यूटर, मोबाइल इत्यादि पर हिंदी में काम करना बहुत सरल हो गया है जिसके कारण इसके प्रति लोगों में सम्मान की भावना आयी है। पहले हम किसी से अंग्रेजी में बात करते हुए समझते थे कि वो पढ़ा लिखा है परंतु आजकल विपरीत है, कि हम हिंदी में बात करने में अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं। डिजिटलीकरण के बाद से काफी कार्य पेपर लिखने इत्यादि में बढ़ा है। अतः इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल भारत के बाद हिंदी में कार्य करने में बहुत आसानी ही नहीं होगी, बल्कि छोटे–छोटे गांवों एवं कस्बों के लोगों को अपनी बात हिंदी में रखने में बहुत ही सरल महसूस होगा, जैसा कि आजकल हम देखते हैं कि दूर–दूर की सूचना, समाचार इत्यादि गांवों तक बहुत कम समय में प्राप्त होते हैं। अतः इन सब के कारण देश को प्रगति करने में बहुत आसानी होगी एवं देश तेज गति से विकसित होगा।

कौवा और साधू की गाथा

रोहन सिंह
सुरक्षा कर्मी

दोस्तों एक बार कौवा एक पेड़ की डाल पर बैठेबैठे रो रहा था। नीचे से एक साधु - निकलता है और उसके आंसू साधु के ऊपर गिरते हैं। साधु ऊपर देखता है तो कौवा रोता हुआ दिखाई देता है। साधु पूछता है कि-

साधु-: कौवे भाई क्यों रो रहे हो?

कौआ-: बाबा मेरे जीवन में कष्ट ही कष्ट है। भगवान ने मुझे ऐसा बनाया है कि, सभी मेरा तिरस्कार करते हैं। कोई मुझे पसंद नहीं करता हैं। मेरे काले रंग और कर्कश आवाज के कारण लोग मुझे अपने घरों पर बैठने तक नहीं देते हैं। लोग मुझे जूठा खाना खिलाते हैं।

साधु-: सभी को भगवान ने अलग अलग बनाया है। और सबको अलगअलग कुशलता भी दी हैं। इसी - प्रकार तुम्हें भी कुशलता दी है और बाकी पक्षियों की भी अपनी अपनी कहानियां हैं और परेशानियां है।

कौआ-: नहीं साधु महाराज मुझसे अच्छे तो बाकी पक्षी है। जिन्हें लोग पालते हैं, खिलाते हैं, और लोग ज्यादा पसंद करते हैं। मुझे कौन - से लोग पसंद करते हैं, मेरी जिंदगी तो खराब है।

साधु-: अच्छा ठीक है, बता तुझे कौन सा पक्षी बनना है। मैं अपनी शक्ति से तुझे वही पक्षी बना देता हूं।

कौआ-: साधु महाराज मुझे हंस बना दो, कितना बढ़िया रंग है, लोग कितना पसंद करते हैं।

साधु -: ठीक है, मैं तुझे हंस बना दूंगा लेकिन मेरी एक शर्त है कि पहले तू हंस से जाकर मिल आ।

कौवा हंस के पास जाता है, और हंस से बोलता है कि,

कौआ-: हंस भाई तुम्हारा क्या रंग है। पानी में भी चलते हो, क्या विशेषताएं हैं, लोग तुम्हें कितना पसंद करते हैं। तुम्हें देखने के लिए घंटों लोग खड़े रहते हैं, इंतजार करते हैं। अगर मुझे मौका मिले तो मैं हंस बनना पसंद करूंगा।

तब हंस बोलता है कि-

हंस-: कौवा भाई मेरी बहुत बड़ी तकलीफ है। भगवान ने मुझे जो रंग दिया है, वह शांति का रंग है। मुझे अपना रंग देखकर हर दम यह एहसास होता है कि, जैसे कोई मर गया हो और सफेद रंग होने के कारण कोई फोटो खींचता है तो मैं किसी सफेद रंग में छुप जाता हूं। दिखता ही नहीं हूं और सफेद रंग की वजह से मुझे और भी बहुत सारी तकलीफ है।

कौआ -:तुम्हें भी सफेद रंग से तकलीफ है।

हंस -: हां भाई बड़ी तकलीफ है।

फिर कौवा और हंस दोनों साधु बाबा के पास जाते हैं और साधु बाबा से बोलते हैं कि,

कौआ-: हे बाबा मुझे एक मौका देकर तोता बना दो, क्योंकि तोता बडा अच्छा होता है। उसका हरा रंग होता है। लाल चौंच होती है, लोग पालते हैं, पसंद करते हैं। फोटो खींचते हैं। बहुत सारी विशेषताएं हैं। मुझे आप तोता बना दो। लेकिन साधु महाराज बोलता है कि मैं तोता बना दूंगा, लेकिन उससे पहले मेरी एक शर्त है कि तोते से जाकर मिल आओ।

दोनों हंस और कौवा तोते से मिलने चले जाते हैं। तोते को ढूंढा जाता है। एक पेड़ पर बहुत सारे पक्षी बैठे होते हैं। उसमें वह तोते को ढूंढते हैं। चारपांच चक्कर लगा देते हैं और फिर जाकर तोता-

दिखाई देता है। फिर तोते के पास जाकर बोलते हैं कि तुम्हारा क्या रंग है। हरा रंग है, चौंच लाल है। मैं तुम जैसा बनना चाहता हूं। अगर भगवान मुझे मौका दे तो मैं तुम्हारे जैसा ही बनना चाहता हूं। तुम्हारे तो बढ़े मजे होंगे।

तोता -: तुम लोग चार चक्कर पेड़ के लगा लिए। जब मैं दिखाई दिया और मेरे रंग की तारीफ करते हो। भगवान ने मुझे ऐसा रंग दिया कि मैं पेड़ में छुप जाता हूं। कोई मुझे देख ही नहीं पाता है। कोई फोटो खींचता है। तो मैं और पेड़ में दिखता ही नहीं हूं और तुम मेरे रंग की तारीफ कर रहे हो या मेरी बेज्जती कर रहे हो।

हंस और कौआ क्या तुम्हें भी अपनेरंग से तकलीफ है? और क्याक्या परेशानियां है।-

तोता-: मुझे लोग पकड़ने के लिए हरदम घूमते रहते हैं, इसलिए मुझे बचकर रहना पड़ता है। लोग जाल बिछाए रहते हैं। पलपल सतर्क रहना पड़ता है-

इस पर फिर तीनों पक्षी साधु के पास जाते हैं और फिर साधु से बोलते हैं।

तीनो -: महाराज एक मौका और दीजिए। हम लोगों को मोर बना दीजिए। मोर बढ़िया पक्षी है, लोग उसका सम्मान करते हैं, राष्ट्रीय पक्षी है।

तो साधु की वहीं शर्त होती है कि मैं मोर बना दूंगा परंतु एक बार मोर से जाकर मिल आओ। तीनों जाकर मोर को ढूंढने लगते हैं। जंगल में उसे जैसे तैसे मोर मिलता है। मोर एक गड्ढे में जाकर छुपा हुआ था।

तीनो -: मोर भाई तुम इस गड्ढे में क्यों छुपे हुए हो?

तो मोर बोलता है कि-

मोर-: ध्यान से देखो वो झाड़ियों के पीछे एक शिकारी खड़ा हुआ है। और वह मुझे ही ढूंढ रहा है। मुझे अपने भारी वजन और भारी पंखों से बहुत परेशानी है और अभी 1 घंटे पहले उसी शिकारी ने मेरे साथी को मार दिया और उसके पंखों को नोच नोच कर रख लिया। अब उन पंखों को पूरे मार्केट में बेचा जाएगा और लोग अपने घरों की सजावट में इस्तेमाल करेंगे।

फिर कौवा और बाकी पक्षी चारों साधु के पास जाते हैं, तो साधु बोलते हैं-

साधु:- है भगवान ने जिसको जिस रूप में बनया है जो विशेषताएं दी वह अतुलनीय हैं। भगवान ने सबको कुछ मजबूत तो कुछ कमज़ोर विशेषताएं दी है। अगर हम कमजोर कड़ियों पर ध्यान देगे तो खुद को कमजोर महसूस करेंगे यदि मज़बूत कड़ियों पर ध्यान देंगे तो हम खुद को मज़बूत महसूस करेंगे। सभी पक्षियों को अपनी भूल का एहसास हो जाता है। और जीवन जीने का मूल सूत्र मिल जाता है किसी से भी अपनी तुलना न करे।

धन और ज्ञान

भवानी मिश्रा
एमटीएस

बहुत समय पहले की बात है, एक राजा घने जंगल में शिकार कर रहा था तभी तेजी से से बारिश होने लगी और हवा भी बहुत तेज चलने लगी। जब कुछ देर बाद बारिश बंद हुई तो राजा ने देखा कि कोई भी सैनिक उसके साथ नहीं है। वह उनसे बिछड़ गया था। घने जंगल में पैदल चलने के कारण राजा को बहुत तेज भूख और प्यास लगी। वह बहुत परेशान हो गया। तभी राजा को तीन व्यक्ति आते हुए दिखे राजा ने उनको बड़ी विनम्रता से बुलाया और उनसे कहा कि मुझे बहुत भूख और प्यास लगी है। क्या मुझे यहां कुछ खाना और पानी मिलेगा ? उन तीनो व्यक्तियों ने कहा क्यों नहीं, जरूर मिलेगा, फिर तीनों अपने घर से राजा के लिए खाना और पानी लेकर आ गये। खाना खाने के बाद राजा बोला कि मैं राजा हूं। शिकार खेलते खेलते रास्ता भूल गया और सैनिक भी नहीं मिले। तुम्हारी इस सेवा भक्ति से मैं बहुत खुश हूं। मांगो जो कुछ मांगाना चाहते हो। पहले व्यक्ति ने कहा मुझे ढेर सा धन चाहिए ताकि मैं अपने घर का पालन पोषण ठीक ढंग से कर सकूं। फिर दूसरे व्यक्ति ने कहा मुझे तो घोड़ा और महल चाहिए। राजा ने दोनो की मांगे पूरी करने के लिए हामी भर दी। फिर तीसरा व्यक्ति बोला महाराजा मुझे तो ज्ञान चाहिए और कुछ नहीं। राजा ने उस तीसरे व्यक्ति के लिए एक अध्यापक की व्यवस्था कर दी और वह पढ़ लिखकर राजा के यहां मंत्री बन गया।

काफी समय बाद राजा को अपनी पुरानी जंगल वाली बात याद आई तो राजा ने उन दोनों व्यक्तियों से मिलना चाहा। रात को राजा ने सबको खाने पे बुलाया और सबसे पूछा कैसे हो आप सब। तो पहले वाले ने कहा मैं तो कंगाल हो गया हूं, सारा पैसा समाप्त हो गया। फिर राजा ने दूसरे व्यक्ति से पूछा उसने बोला कि मेरा तो कुछ धन चोरी हो गया अब थोड़ा ही धन रह गया वो भी समाप्त होने वाला है। मैं बहुत परेशान हूं। फिर राजा ने अपने मंत्री यानी तीसरे व्यक्ति से पूछा वह बोला महाराज मैंने तो ज्ञान मांगा था। मेरा तो दिन प्रतिदिन ज्ञान बढ़ता ही जा रहा है। अपने मित्र की यह बात सुनकर उन दोनों व्यक्तियों को बहुत ग्लानि हुई। इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि ज्ञान से बढ़कर कोई धन नहीं है जो बांटने से ही बंटता है ज्ञान को कोई चोर चुरा नहीं सकता।

एक पल में क्या वक्त बदल जाए..

मो.शाहिद
स्टेशनरी इंचार्ज

बस तू ही है इस दुनिया में
तुझ सा है कोई और कहाँ
ग़र हो न भरोसा बात में तो,
तू भी यहाँ और मैं भी यहाँ,,
तेरे हुंकार में वो दम है
सारी दुनिया भी थम जाए,,
ख़ुद पर हो विश्वास अगर
एक पल क्या वक्त बदल बया...

जीवन में सजे हैं कुछ सपनें
हर हाल में पूरे करने हैं
सूरज के नीचे हैं मोती
वो रखने हैं तो रखने हैं,,
घेरा हो हज़ारों मुश्किल का
मेहनत के आगे झुकने हैं
सूरज पर छाये बादल भी
एक न एक दिन तो छटनें है
क्या हुआ नही या हो न सका
ऐसा कुछ ढूढ़ के तो लाए..
ख़ुद पर हो विश्वास अगर,
एक पल क्यावक्त बदल जाए..,,

सबकुछ तो करना आसां है
रोके क्यों कोई आज भला..
झोंके में छिपा है एक तूफां
वैसे ही हम में जोश भरा
हो वक्त का पहरा मुझ पर क्यों
हम वक्त से आगे रहते हैं
धरती पर यूँ तो चलते हैं
पर आसमान में रहते हैं ..
कहते हैं सबकुछ किस्मत है
तू ख़ुद ही फ़रिश्ता बन जाए..
ख़ुद पर हो विश्वास अगर,
एक पल क्या...वक्त बदल जाए..

उमेश सिह
ऑफिस बॉय

बुद्धिमान यात्री

एक यात्री घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था। एक जंगल को पार करते समय उसे थकान महसूस होने लगी। इसलिए वह घोड़े से नीचे उतरा एक छायादार वृक्ष के नीचे लेट गया।

जल्दी ही उसे नींद आ गई। उसका घोड़ा वहीं पास में घास चरने लगा। कुछ घंटों बाद यात्री उठा तो उसने देखा कि उसका घोड़ा गायब है। उसने उसे वहाँ चारों तरफ ढूँढा, लेकिन उसे घोड़ा नहीं मिला। तब उसने अपना मोटा डंडा उठाया और घोड़ा चोर को ढूँढने लगा।

घोड़े को ढूंढते और डंडा घुमाते वह एक पास के गांव में पहुंचा। गांव में पहुंचकर वह चिल्लाकर बोला "मेरा घोड़ा किसने चुराया है? जिसने भी ये कार्य किया है वह मेरा घोड़ा लौटा दे, अन्यथा मैं वही करूंगा, जो मैंने पिछली बार किया था" चोर उसी गांव का था। उसकी बात सुनकर चोर डर गया और वह तुरंत घोड़े को ले गया।

वह यात्री के सामने हाथ जोड़कर बोला, “मुझे माफ कर दो। ये रहा तुम्हारा घोड़ा। लेकिन ये तो बताओ कि जब पिछली बार तुम्हारा घोड़ा चोरी हुआ था, तब तुमने क्या किया था?” बुद्धिमान यात्री बोला, "कुछ भी नहीं किया था। मैंने नया घोड़ा खरीद लिया था।

वास्तविक दर्द

लवली सूदन
ओ.ए. एण्ड केयर टेकर(परि.।।)

काफी समय पुरानी बात है। एक गांव में एक गरीब किसान रहता था । उसकी एक बेटी थी जो पास गांव के स्कूल मे पढ़ती थी । एक दिन स्कूल मे प्रिंसिपल ने बहुत ही कड़े शब्दों में किसान की बेटी रीटा से पिछले एक साल की स्कूल की फीस मांगी, तो रीटा ने कहा मैडम मे घर जाकर आज पिता जी से कह दूंगी । घर जाते ही बेटी ने माँ से पूछा पिता जी कहाँ है ? तो माँ ने कहा तुम्हारे पिता जी तो रात से ही खेत मे है बेटी दौड़ती हुई खेत मे जाती है और सारी बात अपने पिता को बताती है । रीटा का पिता बेटी को गोद मे उठाकर प्यार करते हुए कहता है की इस बार हमारी फसल बहुत अच्छी हुई है अपनी मैडम को कहना अगले हफ्ते सारी फीस स्कूल में जमा कर देंगे। तो बेटी बोली पिताजी क्या हम मेला भी जाएंगे ? हाँ हम मेला भी जाएंगे और पकोड़े, बर्फी भी खाएंगे । रीटा इस बात को सुनकर बहुत खुश हुई और खूब नाचती है और घर आते वक्त रस्ते मे अपनी सहेलियों को बताती है कि मै अपने माँ पापा के साथ मेला देखने जाउंगी,पकोड़े बर्फी भी खाउंगी ये बात सुनकर पास ही खड़ी एक बजुर्ग कहती है ,बेटी रीटा मेरे लिए क्या लाओगी मेले से ? काकी हमारी फसल बहुत अच्छी हुई है मैं आपके लिए नए कपडे लाऊंगी रीटा कहती हुई घर दौड़ जाती है। अगली सुबह रीटा स्कूल जाकर अपनी मैडम को बताती है कि मैडम इस बार हमारी फसल बहुत अच्छी हुई है। अगले हफ्ते सब फसल बिक जाएगी और पिता जी आकर सारी फीस भर देंगें। यह बताकर रीटा चुप चाप क्लास मे जाकर बैठ जाती है और मेला घूमने के सपने देखने लगती है । तभी ओले पड़ने लगते है । तेज बारिश आने लगती है, बिजली कड़कने लगती है। पेड़ ऐसे हिलते है मानो अभी गिर जाएंगे । रीटा एकदम घबरा जाती है।

रीटा की आँखों मे आंसू आने लगते है और डर फिर सताने लगता है । फसल बर्बाद होने का, फीस ना दे पाने का । स्कूल खत्म होने के बाद वो धीरे धीरे कांपती हुई घर की तरफ बढ़ने लगती है। हुआ भी ऐसा कि सभी फसल बर्बाद हो गई और रीटा स्कूल में फीस जमा नही करने के कारण ताना सुनने लगी।

उस छोटी सी बच्ची को मेला घुमने और बर्फी खाने का सपना मन में ही रह गया। छोटे किसान और मजदूरों के परिवार में जो दर्द है उसे समझने में पूरी उम्र भी गुजर जाएगी तो भी शायद वास्तविक दर्द को महसूस नही कर सकते।

अनिल कुमार
प्रेषक

यातायात के नियमों का पालन

खुशहाल जीवन है अगर बिताना
तो सुरक्षा के नियमों को जरूर अपनाना।

यातायात के नियमों का करो पालन सख्ती से
तभी मिलेगी दुर्घटनाओं की समस्याओं से मुक्ति।

अगर चलाओगे स्पीड में वाहन,
यह है यमराज का आवाहान।

यातायात नियमों का अनुपालन
सुरक्षित जीवन का संचालन।

सड़क पर दुर्घटना से रहना है सचेत
तो मोबाइल पर बात से करें परहेज।

सड़क सुरक्षा में लापरवाही,
जीवन कर दे दुखदायी।

स्पीड ब्रेकर का सही डिजाईन एवं निर्माण
दे सड़क सुरक्षा में भारी योगदान।
मशीन उपकरण की नियमित जांच
न आए जीवन पर आंच

हेलमेट का उपयोग दुर्घटना होने पर करें सहयोग।
सड़क पर जो सुरक्षा को भूला,
उसके घर का बुझ गया चूल्हा।

करें सड़क नियमों का पालन
जब भी चलाए कोई वाहन।।

सच्ची घटना

संजय चौहान
संदेश वाहक

मोहन सिंह एक सेवानिवृत अध्यापक थे। सुबह जब वह उठे तो स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। सांय सात बजे तेज बुखार के साथ–साथ वे सारे लक्षण दिखाई देने लगे जो एक करोना पॉजिटिव मरीज के अंदर दिखाई देते है। परिवार के सदस्यों के चेहरों पर एक डर के साथ एक खौफ सा दिखाई दे रहा था। उनकी चारपाई घर के एक पुराने बड़े से बाहरी कमरे में बिछा दी गई। जिसमें इनको एक पालतू कुत्ता जिसका नाम मार्शल है वो भी उसके साथ चला गया। मोहन जी कुछ साल पहले एक छोटा सा घायल पिल्ला सड़के से उठाकर लाये थे और अपने बच्चे की तरह उसका पालन पोषण किया। उनका नाम भी उन्होनें ही रखा उसे प्यार से मार्शल बुलाते हैं। उस कमरे में अब मोहन जी और उनका प्यारा मार्शल ही रहता है। उनसे उनके बहू बेटों ने दूरी बना ली और बच्चों को भी उनके पास नहीं जाने देते। फिर उन्होनें सरकार द्वारा जारी किए गए नंबर पर फोन करके सूचना दी। खबर सारे मुहले में फैल चुकी थी। लेकिन उनसे मिलने कोई भी नहीं आया। साड़ी के पल्ले से मुंह लपेटे हुए हाथ में छड़ी लिये पड़ोस की कोई एक बुर्जग महिला आई और मोहन जी की पत्नी से बोली अरे कोई दूर से ही खाना सरका दो। अस्पताल वाले तो इसे भूखा ही ले जाएंगे। अब प्रश्न ये था कि उनको खाना देने के लिए कौन जाए ? बहू ने खाना अपनी सास को पकड़ा दिया, अब मोहन जी की पत्नी के हाथ थाली पकड़ते ही कांपने लगे, पैर मानो खूंटे से बांध दिए गए हों। इतना देखकर वह पड़ोसन बोली, अरी तेरा तो पति है, तू भी किन ख्यालों में पड़ी है, मुंह में कपड़ा लगाकर चली जा और दूर से थाली सरका दे। वो अपने आप उठाकर खा लेगा। सारा वार्तालाप मोहन जी चुपचाप सुन रहे थे। उनकी आंखे नम थी और कांपते होंठो से बोले कोई मेरे पास ना आए तो बेहतर है और मुझे भूख भी नहीं है।

इसी बीच एम्बुलेंस आ जाती है और मोहन जी को एम्बुलेंस में बैठने के लिए बोला जाता है। मोहन जी घर के दरवाजे पर आकर एक बार पलटकर अपने घर की तरफ देखते हैं। पोता पोती पहली मंजिल की खिड़की से मास्क लगाए दादा को निहारते हुए और उन बच्चों के पीछे सर पर पल्लू ओढ़े उनकी दोनों बहुएं दिखाई पड़ती हैं। घर के दरवाजे से हटकर बरामदे पर दोनो बेटे काफी दूर अपनी मां के साथ खड़े थे। विचारों का तूफान मोहन

जी के अंदर उमड़ रहा था। उनक पोती ने उनकी तरफ हाथ हिलाते हुए टाटा एवं बाए कहा, एक क्षण को उन्हें लगा कि जैसे जिंदगी ने अलविदा कह दिया हो। मोहन जी की आंखे भर आई। उन्होने झुककर अपने घर को अपने घर की दहलीज को चूमा और एम्बुलेंस में जाकर बैठ गए। उनकी पत्नी ने तुरंत पानी से भरी बाल्टी घर की उस दहलीज पर डाल दी, जिसको मोहन जी चूमकर एम्बुलेंस में बैठे थे। इसे तिरस्कार कहो या मजबूरी, लेकिन ये दृश्य देखकर उनका कुत्ता भी रो पड़ा और उसी एम्बुलेंस के पीछे–पीछे हो लिया। जो मोहन जी को अस्पताल लेकर जा रही थी। मोहन जी अस्पताल में 14 दिनों के आब्जरवेशन पीरियड में रहे। दोबारा टेस्ट किया गया तो उनकी रिपोर्ट सामान्य थी। उन्हें पूर्णतः स्वस्थ घोषित करके छुट्टी दे गई। जब अस्पताल से बाहर निकले तो उनको अस्पताल के गेट पर उनका कुत्ता मार्शल बैठा दिखाई दिया। दोनों एक दूसरे लिपट गए। एक की आंखों से गंगा तो दूसरे की आंखो से यमुना बह रही थी। ऐसा दृश्य देकर आसपास के लोगों के भी आंसू आ गए। जब तक मोहन जी के बेटों की लम्बी गाड़ी उन्हें लेने पहुंचती, तब तक वे अपने मार्शल कुत्ते को लेकर किसी दूसरी दिशा की ओर निकल चुके थे। उसके बाद वह कभी दिखाई नहीं दिए। आज उनकी फोटो के साथ उनकी गुमशुदा की खबर छपी है। अखबार में लिखा था कि सूचना देने वाले को 40 हजार ईनाम दिया जाएगा। हां 40 हजार पढ़कर ध्यान आया कि इतनी ही तो उनकर मासिक पैंशन आती थी। जिसको वो अपने परिवार के ऊपर हंसते हंसते उड़ा दिया करते थे। एक बार आप मोहन जी की जगह पर स्वयं को रखकर देखो तो कल्पना करो कि इस कहानी में मोहन जी का किरदार आप हो आपका सारा अहंकार और सब मोह माया खत्म हो जाएगी। हे करोना, तू पूरी दुनिया में मौत का तांडव कर रहा है पर सचमूच में तूने जीवन का सार समझा दिया है। तेरे लिए अमीर–गरीब, छोटा–बड़ा, स्त्री–पुरूष, राजा–रंक कोई भेद भाव नहीं सब एक समान है।

संतोष
ऑफिस बॉय

कहाँ हैं भगवान

एक आदमी हमेशा की तरह अपने नाई की दूकान पर बाल कटवाने गया बाल कटाते वक़्त अक्सर देश दुनिया की बातें हुआ करती थीं- आज भी वे सिनेमा , राजनीति और खेल जगत इत्यादि के बारे में बात कर रहे थे कि अचानक भगवान् के अस्तित्व को लेकर बात होने लगी नाई ने कहा देखिये भैया . आपकी तरह मैं भगवान् के अस्तित्व में यकीन नहीं रखता तुम ऐसा क्यों कहते हो?", आदमी ने पूछा अरे ये समझना बहुत आसान है बस गली में जाइए और आप समझ जायेंगे कि भगवान् नहीं है। आप ही बताइए कि अगर भगवान् होते तो क्या इतने लोग बीमार होते ?इतने बच्चे अनाथ होते। अगर भगवान् होते तो किसी को कोई दर्द कोई तकलीफ नहीं होती। नाई ने बोलना जारी रखा मैं ऐसे भगवान के बारे में नहीं सोच सकता जो इन सब चीजों को होने दे । आप ही बताइए कहाँ है भगवान ? आदमी एक क्षण के लिए रुका कुछ सोचा पर बहस बढे ना इसलिए चुप ही रहा नाई ने अपना काम ख़तम किया और आदमी कुछ सोचते हुए दुकान से बाहर निकला और कुछ दूर जाकर खड़ा हो गया। कुछ देर इंतजार करने के बाद उसे एक लंबी दाढी मूंछ वाल अधेड व्यक्ति उस तरफ आता दिखाई पड़ा। उसे देखकर लगता था मानो वो कितने दिनां से नहाया धोया ना हो। आदमी तुरंत नाई की दुकान में वापस चला गया और बोला जानते हो इस दुनिया में नाई नहीं होते।

भला कैसे नहीं होते हैं ? नाई ने सवाल किया । मैं साक्षात तुम्हारे सामने हूँ! नहीं आदमी ने कहा वो नहीं होते हैं वरना किसी की भी लम्बी दाढ़ी – मूछ नहीं होती पर वो देखो सामने उस आदमी की कितनी लम्बी दाढ़ी मूंछ है। अरे नहीं भाई साहब नाई होते हैं, लेकिन बहुत से लोग हमारे पास नहीं आते नाई बोला। बिल्कुल सही आदमी ने नाई को रोकते हुए कहा। यही तो बात है। भगवान भी होते हैं पर लोग उनके पास नहीं जाते और ना ही उन्हें खोजने का प्रयास करते हैं।

संजय कुमार
ऑफिस बॉय

डरपोक पत्थर

बहुत पहले की बात है एक शिल्पकार मूर्ति बनाने के लिए जंगल में पत्थर ढूंढने गया। वहाँ उसको एक बहुत ही अच्छा पत्थर मिल गया। जिसको देखकर वह बहुत खुश हुआ और कहा यह मूर्ति बनाने के लिए बहुत ही सही है। जब वह आ रहा था तो उसको एक और पत्थर मिला उसने उस पत्थर को भी अपने साथ ले लिया। घर जाकर उसने पत्थर को उठा कर अपने औजारों से उस पर कारीगरी करनी शुरू कर दिया। औजारों की चोट जब पत्थर पर हुई तो वह पत्थर बोलने लगा की मुझको छोड़ दो इससे मुझे बहुत दर्द हो रहा है। अगर तुम मुझ पर चोट करोगे तो मै बिखर कर अलग हो जाऊंगा। तुम किसी और पत्थर पर मूर्ति बना लो। पत्थर की बात सुनकर शिल्पकार को दया आ गयी। उसने पत्थर को छोड़ दिया और दूसरे पत्थर को लेकर मूर्ति बनाने लगा। वह पत्थर कुछ नहीं बोला। कुछ समय में शिल्पकार ने उस पत्थर से बहुत अच्छी भगवान की मूर्ति बना दी।

गांव के लोग मूर्ति बनने के बाद उसको लेने आये। उन्होनें सोचा कि हमें नारियल फोड़ने के लिए एक और पत्थर की जरुरत होगी। उन्होंने वहाँ रखे पहले पत्थर को भी अपने साथ ले लिया। मूर्ति को ले जाकर उन्होंने मंदिर में सजा दिया और उसके सामने उसी पत्थर को रख दिया। अब जब भी कोई व्यक्ति मंदिर में दर्शन करने आता तो मूर्ति को फूलों से पूजा करता, दूध से स्नान कराता और उस पत्थर पर नारियल फोड़ता था। जब लोग उस पत्थर पर नारियल फोड़ते तो बहुत परेशान होता।

उसको दर्द होता और वह चिल्लाता लेकिन कोई उसकी सुनने वाला नहीं था । उस पत्थर ने मूर्ति बने पत्थर से बात करी और कहा की तुम तो बड़े मजे से हो लोग तो तुम्हारी पूजा करते है। तुमको दूध से स्नान कराते है और लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाते है। लेकिन मेरी तो किस्मत ही ख़राब है मुझ पर लोग नारियल फोड़ कर जाते है। इस पर मूर्ति बने पत्थर ने कहा की जब शिल्पकार तुम पर कारीगरी कर रहा था यदि तुम उस समय उसको नहीं रोकते तो आज मेरी जगह तुम होते।

लेकिन तुमने आसान रास्ता चुना इसलिए अभी तुम दुःख उठा रहे हो। उस पत्थर को मूर्ति बने पत्थर की बात समझ आ गयी थी। उसने कहा की अब से मै भी कोई शिकायत नहीं करूँगा। इसके बाद लोग आकर उस पर नारियल फोड़ते। नारियल टूटने से उस पर भी नारियल का पानी गिरता और अब लोग मूर्ति को प्रसाद का भोग लगाकर उस पत्थर पर रखने लगे।

एक चिड़िया की कहानी

मोहम्मद आसिफ
ऑफिस बॉय

एक चिड़िया जो बहुत ऊँची उड़ती थी और इधर उधर चहकती रहती थी। कभी इस टहनी पर कभी उस टहनी पर फुदकती रहती थी। उस चिड़िया की एक आदत थी वह जो भी दिन में उसके साथ होता अच्छा या बुरा उतने पत्थर अपनी पोटली में रख लेती और अक्सर उन पत्थरों को पोटली से निकालकर देखती । अच्छे पत्थरों को देखकर बीते दिनों में हुई अच्छी बातों को याद करके खुश होती और खराब पत्थरों को देखकर दुखी होती। ऐसा वह रोज करती है। रोज पत्थर उठाने से उसकी पोटली बहुत भारी होती जा रही थी। कुछ दिन बाद उसे भारी पोटली के साथ उड़ने में दिक्कत होने लगी। पर उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि वह उठ क्यों नहीं रही। कुछ समय और बीता पोटली और भारी होती गई। अब तो उसका जमीन पर चलना भी मुश्किल हो रहा था। एक दिन ऐसा आया कि वह खाने पीने का भी इंतजाम नहीं कर पाई और अपने पत्थरों के बोझ से उसकी मृत्यु हो गई।

ऐसा ही हमारे साथ होता है जब हम पुरानी बातों की पोटली अपने साथ रखते हैं और वर्तमान का आनंद लेने की जगह भूतकाल की बातों की ही सोचने में लगे रहते है। इस पल का आनंद ले और अपने जीवन को आनंद से जिए।

मो. आदिल
ऑफिस बॉय

एक निश्चय–एक अमल

एक लड़के ने एक धनी आदमी को देखकर धनवान बनने को निश्चय किया। कई दिन तक वह कमाई में लगा रहा और कुछ पैसे भी कमा लिए। इसी बीच उसकी भेंट एक विद्वान व्यक्ति से हुई। अब उसने विद्वान बनने का निश्चय किया। दूसरे दिन से वह कमाई धमाई छोड़कर पढ़ने में लग गया। अभी अक्षर अभ्यास सीख ही रहा था कि उसकी भेंट एक संगीतज्ञ से हुई। अब उसे संगीत में अधिक आर्कषण दिखाई दिया। अगले दिन से ही पढ़ाई छोड़ दी और संगीत सीखने लगा। उसकी काफी उम्र बीत गई। ना वह धनी हो सका ना विद्वान और ना ही ढंग से संगीत सीख पाया।

एक दिन उसकी एक महात्मा से भेंट हुई । उसने अपना दुख का कारण बताया। महात्मा मुस्कराकर बोले बेटा! दुनिया बड़ी विशाल है। जहां भी जाओगे कोई ना कोई आपको आकर्षण दिखाई देगा। एक निश्चय कर लो और उसी पर आप अमल करते रहो तो तुम्हारी उन्नति जरूर होगी। बार–बार रूचि बदलते रहने से कोई सफलता हाथ नहीं आती। और उसने निश्चय किया कि जो सबसे पहले काम किया था उसी काम को मन लगााकर करूंगा। फिर उस व्यक्ति ने वही रास्ता अपनाया पैसे कमाने का । बड़ी मेहनत से काम किया । उसके बाद उसके जीवन में धन और एश्वर्य प्राप्त हुआ।

बिशन सिंह
ऑफिस बॉय

बिना बिचारे जो करे, सो पाछे पछताए

किसी नगर में देशवर्मा नाम का एक ब्रह्माण रहता था। उसके घर के पास एक बिल में एक नेवली रहती थी। एक दिन ब्रह्माण के यहां एक पुत्र ने जन्म दिया। उसी दिन नेवली ने भी एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे को जन्म देने के बाद नेवली अधिक दिन तक जीवित नहीं रही। ब्रह्माण की पत्नी को नेवली के बच्चे पर बड़ी दया आई और अपने पुत्र की तरह उस नेवली के बच्चे का भी लालन–पालन करने लगी। धीरे–धीरे नेवला बड़ा हो गया। अब वह ब्रह्माण के ही घर में रहना लगा। ब्रह्माण के पुत्र और नेवले में काफी मित्रता हो गई। लेकिन अपने पुत्र और नेवले में इतना प्यार होने पर भी ब्रह्माणी हमेशा उसके प्रति शंकित ही रहती थी।

एक दिन की बात है ब्रह्माणी अपने पुत्र को सुलाकर हाथ में घड़ा लेकर अपने पति से बोली मैं सरोवर पर जल लेने जा रही हूं। जब तक मैं ना लौटूं आप यहीं रहना और बच्चे की देखभाल करते रहना। ब्रह्माणी जब चली गई तो उसी समय किसी यजमान ने आकर ब्रह्माण को खाने का निमंत्रण दिया। उस नेवले पर ही अपने पुत्र की रक्षा का भार सौंपकर ब्रह्माण अपने यजमान के यहां चला गया। संयोग की बात है कि उसी समय न जाने कहां से एक काला नाग वहां आ पहुंचा और बच्चे के पलंग की ओर बढ़ने लगा। नेवले ने उसे देख लिया उसे डर था कि नाग कहीं मेरे मित्र को ना डस ले। इसलिए उस काले नाग पर टूट पड़ा। नाग बहुत फुर्तिला था, उसने कई जगह नेवले के शरीर को काटकर उसमें जख्म बना दिए। किन्तु अंत में नेवले ने उसे मारकर उसके टुकड़े कर दिए। नाग को मारने के बाद नेवला उसी दिशा में चल पड़ा जिधर ब्रह्माणी जल भरने सरोवर गई थी। उसने सोचा कि वह उसकी वीरता की प्रंशसा करेगी किन्तु हुआ विपरित। उसका खून से भरा शरीर को देखकर ब्राह्मणी का मन अंशाकाओं से भर गया कहीं उसने मेरे पुत्र को तो नहीं काट लिया।

यह विचार आते ही उसने क्रोध से सिर पर उठाये घड़े को नेवले पर पटक दिया। छोटा सा नेवला जल से भरे घड़े की चोट ना सह सका और उसने वहीं पर दम तोड़ दिया। ब्रह्माणी दौड़ती हुई अपने घर पहुंची तो वहां पहुंचकर उसने देखा कि उसका पुत्र तो शांति से सो रहा था। वहीं मृत काला नाग भी पड़ा था । ब्रह्माणी ने सोचा मेरे बच्चे की जान बचाने के लिए नेवला ने नाग को मार दिया। और मेरे बच्चे की रक्षा की और मैंने ही उसे क्रोध में आकर मार दिया।

ब्रह्माणी बहुत रोई उसके मन में बहुत ग्लानि हुई। उसने नेवले को अपने बच्चे की तरह पाला और मैने ही उसे मार दिया। उसी समय ब्रह्माण भी लौट आया। वहां उसने अपनी पत्नी को विलाप करते हुए देखा। पत्नी ने सारी व्यथा अपने पति को बताई तो ब्रह्माण भी बहुत दुखी हुआ। उसने अपने पति को कोसते हुंए कहा कि मैंने तुम्हे यहीं रूकने को कहा पर तुम बच्चे को छोड़कर चले गए। उस नेवले ने अपनी जान पे खेलकर हमारे बच्चे की जान बचाई और हमने बिना सोचे समझे उसको हत्यारा समझकर उसे ही मार दिया। फिर दोनों उस सरोवर पर गए और उस नेवला को अपने गले लगाकर फूट–फूटकर रोने लगे । वहां गढ़ा खोदकर उसे दबा दिया। फिर दुखी मन से अपने घर को लोटे।

मनुष्य को बिना सोचे समझे और क्रोध में कोई ऐसा कदम नहीं उठाना चाहिए जिससे हमको बाद में पछताना ना पड़े।

धीरज कुमार
ऑफिस बॉय

साधू और चोर

एक गांव के किनारे एक मंदिर था उस मंदिर में एक साधू रहता था। उसी गांव में एक चोर भी रहता था। इससे उसके घरवाले बहुत परेशान रहते थे और उसकी शादी भी नहीं हो रही थी। चोर अपने ही गांव में ही चोरी करता था, पर उससे सब डरते थे। वह चोरी भी छोटी–छोटी करता था। गांव वाले भी उससे बहुत दुखी थे। चोर को लाभ कुछ नहीं होता था पर परेशानिया सबके लिए छोड़ देता था। एक दिन चोर ने सोचा छोटी मोटी चोरी से कुछ हो नहीं रहा तो उसने सोचा मंदिर के चढावे से साधू की थैली पैसों से भरी पड़ी है। उस साधू ने उस पैसा का क्या करना है। यह सोचकर वह साधू की कुटिया पर आना जाना शुरू कर दिया।

चोर अपनी मीठी मीठी बातें करके साधू का मन जीत लिया। साधू भी उसकी बातों में आकर उससे बहुत प्रसन्न रहते थे। चोर मुंह में राम और बगल में छूरी लेकर दिन भर साधू महाराज की सेवा करता। पर साधू जानते थे की वह चोर है। रोज थैली को देखकर चोर की तबियत हरी रहती थी बस मौके की तलाश थी। चोर के डर के कारण महाराज थेली रात को बाहर और दिन में अंदर रख देते थे। महाराज रात भर खराटें भरते और चोर रात भर थैली को ढूंढते थक जाता। घनघोर अंधेरी रात में साधू की आत्मा ने कहा कि तू पापी महाराज है। उस थेली से तेरा क्या लगाव। उस चोर का भला कर। उसी रात चोर की आत्मा ने भी कहा दो आंख दो हाथ और दो पैर दिए हैं भगवान ने। मेहनत कर चोरी के चक्कर में पड़कर अपनी जिंदगी खराब मत कर मेहनत कर। चोरी छोड़ दे । जब तक नीयत खराब रहेगी तब तक भाग्य भी तुझ पर मेहरबान नहीं रहेगी। एक थैली के कारण पूरी जिंदगी नहीं कटेगी और यह कितने दिन चलेगी। उस रात साधू ने थैली बहार नहीं रखी। सुबह साधू महाराज ने देखा कि थैली तो वहीं है पर चोर नहीं है। साधू ने सोचा उसकी अंतरात्मा जाग गई है।

प्रदीप सिंह
ऑफिस बॉय

पिंडारी ग्लेशियर

पिंडारी ग्लेशियर उत्तराखंड राज्य के बागेश्वर जिले में स्थित है और कुमाउं मंडल के हिमालय का एक हिस्सा है। यह पिंडारी ग्लेशियर नंदा देवी और नंदकोट चोटियों के बीच स्थित है। यह ग्लेशियर ''पिंडारी घाटी में स्थित है''। पिंडारी ग्लेशियर ''पिंडर नदी'' का स्त्रोत है जो कर्णप्रयाग के संगम पर अलकानन्दा नदी से मिलती है। और यहां से अलकनंदा के रूप में नदी का प्रवाह होता है जो आगे जाकर मंदाकनी और भगीरथी मिलकर गंगा का निर्माण करती है। पिंडर नदी की लंबाई 105 किलोमीटर है। जो नदी के किनारे होते होते गांव हरमल, मानपती, भोपाटा, देवाल, नंदकेसरी, थराली, कुलसारी, नारायणबगड़ और नौटी जैसे कस्बों को पार करती है। इस ग्लेशियर की अधिकतम उंचाई 4200 मीटर है। पिंडारी ग्लेशियर लगभग 5 किमी लंबी और 6 मीटर उंची और 2.5 मीटर चौड़ी है। पिंडारी ग्लेशियर 3 कि मी और 300–400 मीटर चौडाई तक फैला हुआ है। पिंडारी ग्लेशियर के पहुंचने के बाद आपको पिंडारी बाबा के दर्शन होंगे। जिन्हें पिंडारी बाबा के अलावा ''स्वामी धर्मानंद'' के नाम से भी जाना जाता हे। अकेले पिंडारी ग्लेशियर में 'जीरो बिन्दु' नामक स्थान पर रह रहे हैं जो कि खातीगांव और जीरो बिंदु के बीच ना कोई व्यक्ति रहते हैं और ना कोई गांव है। उस स्थान पर दो कुमांऊं मण्डल विकास निगम अतिथि गृह स्थित हें। यदि आप पिंडारी ग्लेशियर ट्रेक नहीं करते हैं तो ट्रेक करने के लिए आपको निम्न रास्ता तय करना होगा। यदि आप दिल्ली से पिंडारी ग्लेशियर की यात्रा तय करना चाहते हैं तो आपको सबसे पहले काठगोदाम पहुंचना होगा। उसके बाद आपको अल्मोड़ा बागेश्वर और अंत मे सौंग पहुंचना होगा। सौंग के बाद आको ट्रेक की शुरूआत होती है। सौंग से खाती गांव की दूरी 19 कि मी है। जो कि खाती गांव यहां का अंतिम गांव है।

राष्ट्रीय ग्रामीण अवसंरचना विकास एजेंसी
15 एनबीसीसी, टॉवर, 5वां तल, भीकाजी कामा प्लेस
नई दिल्ली–110066